तृतीय अध्याय

शिवानी की कहानियों में नायिकाओं के विभिन्न रूप

अ) प्राचीन दृष्टिकोण से शिवानी की कहानियों में नायिकाओं के विभिन्न रूप

(१) जाति के अनुसार --

१) पद्मिनी,

२) चित्रिणी,

३) शंखिनी,

४) हस्तिनी ।

(२) कर्म के अनुसार --

१) स्वकीया,

२) परकीया,

३) सामान्या ।

(३) पति प्रेम के अनुसार --

१) ज्येष्ठा,

२) कनिष्ठा

(४) प्रकृति । गुण के अनुसार ---

१) उत्तमा,

२) मध्यमा ,

३) अधमा ।

(५) वय के अनुसार ---

१) मुग्धा, २) मध्या, ३) प्रौढा ।

(६) दशा के अनुसार ---

१) अन्य सुरति दुःखिता, २) मानवती, ३) गर्विता ।

(७) काल के अनुसार --

१) स्वाधीन पतिका, २) खण्डिता ३) अभिसारिका,

४) कलहान्तरिता ५) विप्रलब्धा ६) प्रोषित पतिका ,

७) वासकसज्जा, ८) विरहोत्काण्ठिता ।

SHIVAJI UNIVERSITY LIBRARY KOLHAPUR

ब) आधुनिक दृष्टिकोण से
शिवाजी की कहानियों में
नायिकाओं के विभिन्न रूप

(१) अवासनात्मक दृष्टिकोण से

१) दादी,

२) माता,

३) पुत्री

४) भगिनी ।

(२) वासनात्मक दृष्टिकोण से

१) प्रेमिकाएँ :-- अ) प्रेम का आदर्श प्रस्तुत करनेवाली नायिकाएँ

ब) असफल प्रेमिकाएँ ।

२) गृहस्थ नायिकाएँ :--

अ) सफल गृहस्थ नायिकाएँ

ब) असफल गृहस्थ नायिकाएँ ।

(३) अन्य नायिकाएँ

१) विधवा नायिकाएँ,

२) पतिता, वेश्या , बलात्कारिता नायिकाएँ

३) शार्विलक, ठगिनी, डकैत नायिकाएँ

४) हत्यारिन । खूनी नायिकाएँ

५) महत्वाकांक्षिणी नायिकाएँ ।

तृतीय अध्याय

शिवानी की कहानियों में नायिकाओं के विभिन्न रूप

वर्ग-१
जाति के अनुसार
शिवानी की कहानियों की नायिकाओं का वर्गीकरण

पहले वर्ग का आधार जाति कहा गया है । वास्तव में नायिकाओं का यह वर्ग और इसका यह नाम दोनों ही 'काम-शास्त्र' से लिए गए हैं । 'काम-शास्त्र' में यह भेद स्त्री की काम सम्बन्धी प्रतिक्रियाओं को लेकर, जो कि उसकी प्रकृति और शारीरिक स्थिति पर निर्भर रहती है, किए गए हैं । ... 'जाति' से तात्पर्य है यहाँ 'प्राकृतिक वर्ग' ।[१]

इस वर्ग के अन्तर्गत चार प्रकार की नायिकाएँ आती हैं :--
१) पद्मिनी, २) चित्रिणी ३) शंखिनी और ४) हस्तिनी ।

(१) पद्मिनी --

पद्मगंधवाली पद्मिनी के नेत्र कमल सदृश, नासिका छिद्र छोटे, युगल-कुच अविरल, केश दीर्घ और श्रोणि अंग ढुलका होता है । वह सुशीला नायिका मधुर वचन बोलनेवाली, नृत्य गीतादि में अनुरक्त और सुडौल शरीरवाली होती है ।

---

१ रीति काव्य की भूमिका - डॉ.नगेंद्र - पृ.सं.१३७ ।

इस तरह के लक्षण रतिरहस्य में पद्मिनी नायिका के बताए गए हैं।`[1]

कामशास्त्र के अनुसार पद्मिनी नारी कमनीय बदन वाली नवनीत या कमल दल के समान कोमल होती है। इसका मुख चन्द्रमा के समान सुन्दर और नेत्र हरिणी के शावक के समान चपल होते हैं। इसके शरीर से पद्मपराग की सुगन्ध आती है। नेत्रों के कोरों में लालिमा छाई रहती है। उन्नत कुच बिल्वफल के समान मनोहर और आकर्षक होते हैं। नासिका तिल के पुष्प के समान मृदु और मधुर होती है।`[2]

`जा रे एकाकी` की नायिका चनुली, इस वर्ग में आ जाती है। देखिए उसका वर्णन, `पुण्यतोया भागीरथी सलिल-से पवित्र अश्रुजल से छलछलाते विकसितांबुज नेत्रपत्र, पन्द्रह दिन के संक्षिप्त हनीमून की मधुर स्मृति का उल्लेख करते ही थरथरा रहे अधरद्वय और सुडौल कांचनसन्निभ देहयष्टि। एक अकेली चनुली ही उस कारागार को ज्योति पुंज बन आलोकित कर सकती थी।`[3]

`भिक्षुणी` कहानी की नायिका किकी का वर्णन देखिए, ...`किकी, जिसकी पृथक वेणी की गरिमा को मैं कभी जूड़े में बाँधने में, दो-दो दर्जन कांटों से भी नहीं सम्हाल पाती थी, जिसकी साड़ी की मांज, रविवर्मा की अंकित मेनका की साड़ी सी चित्रांकित मांज की ही भांति, उस बिल्वस्तनी की मोहक अंग-भंगिमा को और भी भव्य बना उठती थी।`[4]

स्वयं किकी का पति भी उसे पद्मिनी ही कहता है। वह अपने पति का यह दावा इन शब्दों में व्यक्त करती है ...`तुम नहीं समझ पाओगी, भाभी,

---

१ शास्त्रीय समीक्षा के सिद्धान्त भाग(१)- गोविन्दत्रिगुणायत - पृ.सं.२४१

२ - वही - पृ.सं.२४१

३ जा रे एकाकी (अपराधिनी) - शिवानी - पृ.सं.३५।

४ भिक्षुणी (कैंजा) - शिवानी - पृ.सं.१११।

तुम्हारे ननदोई कहते हैं, पद्मिनी के सभी गुण ही विधाता-प्रदत्त होते हैं, न उसके वस्त्र मलिन होते हैं, न देह-परिमल । कहते हैं, यही तो पहचान है तुम्हारी, दो मील दूर भी खड़ी रहोगी, तब भी नथुने मींचते ही तुम्हें पकड़ लूँगा ।'[१]

'तर्पणा' की नायिका पुष्पा पंत भी प्रस्तुत वर्ग में आ जाती हैं । प्रस्तुत नायिका का वर्णन देखिए 'निम्न नाभि, क्षीणा मध्यमा उस बिल्वस्तनी की अलस पदचाप को भला कौन-से जूतों का बन्धन जकड़ सकता था ? और फिर वह जब नहा-धोकर पूजा करने बैठती, तब पीठ पर बिखरे किंचित घुंघराले केश, जिन्होंने रीठे और आंवले के अतिरिक्त कभी किसी सुगन्धित साबुन का स्पर्श भी नहीं किया था, अमावस के अन्धकार की ही भाँति देखनेवाले को सहमाकर रख देते । अर्धोन्मीलित नेत्र और विष्णु सहस्र नाम की आवृत्ति .... की सुमधुर ध्वनि में फड़कते रसीले ओष्ठ मुनियों का मन भी विचलित कर सकते थे ।'[२]

(२) चित्रिणी --

प्रस्तुत श्रेणी की नायिका तन्वंगी, गजगामिनी, चपल दृग, संगीत शिल्पान्विता होती हैं । वह आकार में न बहुत छोटी होती हैं, न बड़ी । उसकी कटि क्षीण होती हैं । मयूर सदृश उसकी बोली होती हैं । श्रेणी और पयोधर पीन होते हैं । बिम्बाफल से सदृश होंठ होते हैं । चित्र, वस्त्र, माला, भूषण आदि शृंगार बनाने में सदैव लगी रहती हैं । प्रणायोपचार की अनुरागिणी होती हैं ।'[३]

चांद कहानी की नायिका चांद को शृंगार बनाने का शौक किस तरह हैं देखिए, 'अपने शोख नीले रंग के गरारे घेरदार को, किसी नृत्यप्रवीणा बाईजी की-सी कुशल घुमेर के साथ फैलाकर, वह अपने प्रिय टीले पर बैठी थी । बैंगनी कमीज के चटख गुलाबी रंग की पारदर्शी झालर के बीच, उसका निर्लज्जता से किया गया उन्मुक्त यौवन प्रदर्शन देख किसी भी कुलवधू के तन-बदन में आग भड़क सकती थी ।'[३]

---

१ तर्पणा - (माणिक) - शिवानी - पृ.सं.५९ ।

२ शास्त्रीय समीक्षा के सिद्धान्त (१) - गोविन्द त्रिगुणायत - पृ.सं.२४१

३ चांद (अपराधिनी) - शिवानी - पृ.सं.९६ ।

(३) शंखिनी --

शंखिनी नायिका हेय होती हैं । वह मोटी या पतली होती हैं । बाँहें लम्बी सिर छोटा, पैर बडे होते हैं । स्तन छोटे होते हैं । लालपुष्पों के समान वस्त्रों की इच्छा रखती हैं । पित्त प्रकृति की होती हैं । कर्कश स्वर बोलती हैं । इसकी नासिका उन्नत होती हैं ।[१]

शंखिनी नायिका के लगभग सभी लक्षण ' अलख माई ' की नायिका वैष्णवी उर्फ लछमी उर्फ लक्ष्मी में दृष्टिगोचर होते हैं - ' एक पल को मैं उसके निर्विकार मर्दाने चेहरे को देखती ही रही थी । कठोर मुखमुद्रा और इससे भी कठोर कंठस्वर .... एकदम सपाट चौडा सीना, बेहद लम्बा कद, बाँकोर काठी, छोटे-छोटे छटे केश, ऊपर से सीधी और नीचे आकर अचानक फैल गई नायिका के उदार नथुने जैसे हर पल सद्य: दागी गई दुनाली बंदूक की ही भाँति गर्म धुआं छोडते जा रहे थे ।'[२]

' तोप ' कहानी की नायिका क्रिश्चियाना वैरानिका टॉमस का वर्णन देखिए ' कण्ठ के पुरुषा-स्वर छ: फुटे मर्दाने शरीर और कृष्ण वर्ण को देखकर किसी कलामर्मज्ञ ने तोप नाम धर दिया था ... तेज लाल रंग की साडियाँ पहनकर वह घूमने निकलती तो छोटी भाभी फिर तुरुप लगाती - ' हाय - हाय कोयले की कोठरी में आग लग गई ।'[३]

(४) हस्तिनी

लक्षण - पैर मोटी-मोटी उँगलियों से समन्वित होते हैं । आकार में गोलमटोल होती हैं । उसके शरीर से हाथी के मद के सदृश दुर्गन्ध आती हैं ।

---

१ शास्त्रीय समीक्षा - के सिद्धान्त (१) - गोविन्द त्रिगुणायत - पृ.सं.२४१

२ अलख माई (अपराधिनी) - शिवानी - पृ.सं.४०-४१ ।

३ तोप - (मेरी प्रिय कहानियाँ) - शिवानी - पृ.सं.१२२ ।

ओठ चंचल और बडे होते हैं । आँखें पिंगल वर्ण की होती हैं । विलास और व्यभिचार में अनुराग रखती हैं ।[1]

'छि: मम्मी तुम गंदी हो' की नायिका जानकी पर ये लक्षण लागू होते हैं । उसका वर्णन देखिए 'मेरी दृष्टि उसके गोल चेहरे से फिसलती घुटनों पर धरे उसके चौकोर सर पृष्ठ पर निबध्द हो गई । ... यदि उसका चेहरा न दिखाकर कोई मुझे उसके दोनों हाथ दिखाता तो मैं सोचती, यह किसी स्वस्थ उद्दण्ड किशोर के पंजे हैं ।'[2]

हस्तिनी नायिका के कुछ अन्य लक्षण जानकी में दृष्टिगोचर होते हैं । जैसे - 'यौवन से गदराई देह, पृथुल चेहरे पर मांसल चिबुक की परतें । ... उसकी उज्ज्वल हंसी, उसके विलासी गढन के अधरों से छलकती, उसके पूरे चेहरे को रससिक्त कर गई ।'[3]

'के' कहानी की नायिका डॉक्टर कमला का आहार , विहार और स्वरूप 'हस्तिनी' नायिका भेद के अनुकूल ही दृष्टिगोचर होता हैं । वह अस्पताल से घर किस तरह आती हैं देखिए, 'शेखर के कमरे में पहुँचते ही' के 'तीव्र आंधी के झोंके के भाँति आ गई । वह हमेशा ऐसे ही आती थी । द्वार भडभडाती, कुर्सियाँ धकेलती वह हाथ का आला झुलाती हाँफ रही थी ।[4]

शेखर और के जब खाना खाने बैठते हैं तो, 'शेखर अपनी नाजुक अंगुलियों से चपाती के नन्हें सौर, सालन में ऐसे डूबोकर कुतर रहा था, जैसे मुंह में दाँत ही न हो , उधर' के 'अपनी भद्दी चौकोर पहाडी भिण्डी-सी अंगुलियों को चाटती

---

१ शास्त्रीय समीक्षा के सिध्दान्त(१) - त्रिगुणायत - पृ.सं. २४२

२ छि: मम्मी तुम गंदी हो (अपराधिनी) - शिवानी - पृ.सं.४३ ।

३ - वही - पृ.सं.४४ ।

४ के (मेरी प्रिय कहानियाँ) - शिवानी - पृ.सं.५३ ।

चटखारती पूरी चपाती का एक ही निवाला बनाती ठूँसती ही जा रही थी ।`[1]

`के` को देखकर उसके पति शेखर की प्रेमिका शेखर से कहती हैं, ` छि:छि: आपकी` के ` मुटल्ली,देखने ही देखने की है हथिनी ।`[2]

कठोर मानसिक आघात भी ` के` की भूख को हरा नहीं पाता -` उसने कचर-कचर पकौडियाँ खाईं , आधी डबल रोटी साफ की, भुने बादाम .. अण्डे... सेब लेकर सोफे पर लद गई । नित्य के अभ्यास से उसने अपनी मैंयार के मोटे तूम्बे-सी टाँगें नीचे लटका दी ।`[3]

---

१ के (मेरी प्रिय कहानियाँ) - शिवानी - पृ.सं.५४

२ - वही - पृ.सं.६३

३ के (मेरी प्रिय कहानियाँ) - शिवानी - पृ.सं.६६ ।

वर्ग-२

` कर्म के अनुसार

शिवानी की कहानियों की नायिकाओं का वर्गीकरण *

इस वर्ग के लिए कर्म शब्द का प्रयोग किया गया है । कर्म के अनुसार नायिकाओं का वर्गीकरण करने के लिए सर्वप्रथम कर्म का तात्पर्य समझना उचित होगा । ` कर्म ` से तात्पर्य नारी-धर्म की दृष्टि से अनुचित उचित कर्म का है ।

(१) अपने पति में अनुरक्त होना नारी का धर्म है और यह उसके लिए उचित कर्म है ।

(२) दूसरे पुरुष से प्रेम करना अनुचित कर्म है । तथा

(३) धन और वासना के लिए वार-विलास करना नीच कर्म है ।

वस्तुत: नायिका के ये तीन भेद नायक - नायिका के सामाजिक बन्धन को लेकर चले है ।` [१]

यदि यह सम्बन्ध वैध अर्थात लोक-वेद सम्मत वैवाहिक सम्बन्ध है तो नायिका ` स्वकीया ` है । यदि अवैध अर्थात् लोक-वेद-विरुध्द स्वतंत्र प्रेम का है तो नायिका ` परकीया ` है और यदि सम्बन्ध प्रेम का आदान-प्रदान न होकर व्यावसायिक है तो वह ` सामान्या ` है ।[२]

सर्वप्रथम ` स्वकीया ` नायिका - भेद के अन्तर्गत आनेवाली शिवानी की कहानी-नायिकाओं की हम चर्चा करेंगे ।

(१) स्वकीया --

` जा रे एकाकी ` की नायिका ` चुनुली ` पतिव्रता स्वकीया नायिका है । पति के प्रति उसके नितांत प्रेम के कारण पति के मृत्यु की वार्ता सुनकर भी वह

---

१ रीति काव्य की भूमिका - डॉ.नगेंद्र - पृ.सं.१३७ ।

२ - वही - पृ.सं.१३७ ।

अपने सौभाग्य - चिह्न नहीं उतारती । नारीवर्ग उसका सामाजिक बहिष्कार कर देता हैं । वह सब-कुछ बरदाश्त कर लेती हैं, परन्तु जब उसकी एक प्रतिवेशिनी उसके सौभाग्य को गालियाँ देती हैं तब उससे यह बात बरदाश्त नहीं होती और क्रोध के कारण उसके हाथों उस प्रतिवेशिनी की हत्या हो जाती हैं । चनुली को सजा हो जाती हैं ।

संयोगवश,उसका फौजी पति जीवित लौट आता हैं, दो एक बार उसे जेल में मिलने भी आता हैं परंतु बाद में वह चनुली से आँखें फेर लेता हैं । हृदयहीन समाज तो उसके लिए अपने द्वार कब के बंद कर चुका हैं । इतना होते हुए भी वह नायक का भला ही चाहती हैं । अंतक वह एकनिष्ठ हैं ।

'साधो ई मुर्दन कै गाँव' की नायिका 'वह' अन्तक अपने डकैत पति में अनुरक्त रहती हैं, जो उम्र में उसके पिता समान हैं । 'मीलनी' की 'सुहासिनी' को अपने पति पर गहरा विश्वास हैं । उसे अपने पति पर कभी संदेह नही होता इसलिए जब उसके शयनकक्षा में किसी दूसरी स्त्री को वह देखती हैं तो अत्यन्त दु:खी हो जाती हैं ।

'ज्यूडिथ से जयन्ती' में 'रमा' का विवाह तीस वर्षीय दुहेजू पति से कराया जाता हैं । उसका पति अपनी पहली पत्नी को कभी भूलता नहीं । हमेशा रमा को जली-कटी सुनाता रहता हैं । फिर भी रमा उससे कभी शिकायत नहीं करती ।

'अनाथ' कहानी की नायिका 'ऐनी' का विवाह बनर्जी से हो जाता हैं । यह आंतरधर्मीय और आंतरप्रांतीय विवाह असफल होता हैं । ऐनी का पूरा जीवन प्रेम-विवाह से ध्वंस्त हो जाता हैं परंतु आज भी उसके मन में बनर्जी के प्रति वही प्रेम और आदर का भाव हैं । 'ऐनी' की तरह 'मौसी' की 'तिला' उर्फ 'मिसेज बेदी' भी स्वकीया नायिका का उदाहरण हैं । ब्रिगेडियर 'मनमोहन बेदी' से उसका आंतरधर्मीय और आंतरप्रांतीय विवाह हो जाता हैं । विवाह के अनन्तर तिला को मिस्टर बेदी के घर का उच्छृंखल और अति आधुनिक वातावरण अच्छा नहीं लगता फिर भी वह एक भारतीय स्त्री की छवि को धक्का नहीं पहुँचाती ।

'बन्द घडी' की 'माया' की शिकायत कुछ अलग प्रकार की है । उसका इंजीनियर पति हमेशा झगडता ही रहता है । एक दिन तंग आकर वह आत्महत्या करना चाहती है परंतु 'बन्दघडी' के कारण वह आत्महत्या नहीं कर सकती । अकस्मात् पति के हँसमुख आगमन से उसका मन प्रसन्न होता है । उसकी खुशी दुगुनी हो जाती है ।

कुछ कहानियों में ऐसा पाया गया है कि पतिव्रता नारी होने पर भी उन्हें सुखद अनुभव नहीं हो पाते जैसे कि 'प्रतीक्षा' में अत्यन्त सुन्दर 'माधवी' की सुन्दरता पर रीझकर उससे विवाह करनेवाला विमल जोशी, माधवी को जब पागलपन का दौरा पडता है तो उसे एकाकी छोडकर चला जाता है । 'लाटी' कहानी की 'बानो' पति के लिए ससुरालवालों का इतना जुल्म सहन करती है कि उसे टी.बी.हो जाता है । पति को सुख देने में असमर्थ, मृत्यु की देहरी पर खडी बानो, स्वयं अस्पताल से भाग जाती है ।

'पिटी हुई गोट' में अठ्ठाईस वर्षा की 'चन्दो' अपने तरेसठ वर्षीय पति के लिए जो त्याग प्रस्तुत करती है वह सर्वथा बेजोड है । जुआरी पति उसे जुए के दाव पर लगाता है ।

इसी तरह, 'स्वकीया' नायिका भेद के अन्तर्गत 'शपथ' की शुभ्रा, 'लिव्' की प्रिया दाम्ले, 'शर्त' की रमा, 'प्रतिशोध' की सौदामिनी, 'मित्र' की राधा, 'अपराजिता' की आरती सक्सेना तथा 'सौत' कहानी की नीरा को भी हम ले सकते हैं ।

(२) परकीया

पर पुरुष से प्रेम करनेवाली परकीया नायिकाओं में हम सर्व प्रथम 'छि: — मम्मी तुम गंदी हो' की नायिका जानकी का अन्तर्भाव करेंगे ।

'छि: मम्मी, तुम गंदी हो' की नायिका जानकी, विवाह के समय सोलह वर्ष की थी और पति अडतालीस वर्ष का । विवाह के बाद पाँच वर्ष बीत जाते

हैं । तीन स्वस्थ सुन्दर सन्तान घर की शोभा बढ़ाते हैं । पति के निर्मम स्वभाव के कारण जानकी ऊब जाती है । ऐसे में पडोस का एक सोलह वर्ष आयु का किशोर उसके घर अंग्रेजी पढने आने लगता है । उससे जानकी का जो रिश्ता बनता है देखिए --- .. ' पडोस का किशोर केवल सोलह वर्ष का था । गोरा रंग । दण्ड-बैठक लगाने के शौक से, बांहों में शोख मछलियाँ असमय ही उभर आई थी । उस पर वय सन्धिकाल की सांघातिक अवस्था में इस प्रवीणा से परिचय हो गया । मुझे अभी ठीक से भोगी भी नहीं थी कि इस मुँह बोली बहन ने राखी बांध दी । रात-भर शकी पति, उसकी चमडी उधेड कर रख देता, पर उसके दफ्तर जाते ही मुग्धा नायिका, दूसरे हंसमुख चेहरे को देखते ही सब व्यथा बिसरकर रह जाती । अपने एकांत शयनकक्ष में ही उसने उसके पढने की व्यवस्था कर दी थी । कब उस ममतामयी बहन का वात्सल्य उत्कट-उन्मद करवट ले बैठा, वह स्वयं ही नहीं जान पाया ।' [१]

' मीलनी ' कहानी में परकीया नायिका का एक नया रूप दृष्टिगोचर होता है । अपनी बहन के प्रसव-काल में देखभाल करने विलासिनी सुहासिनी के घर जाती है और वहाँ विलासिनी, अपनी ही बहन के पति के आकर्षण में बँध जाती है जो परकीया नायिका का ही एक रूप है ' जब जाने का दिन आया, तब ही मुझे लगा प्रणय का विषाम शल्य जिस गहराई से मेरे हृदय में धंस गया है, उसे चाहने पर भी मैं अब नहीं खींच सकती । मेरी दुर्बलता का आभास अब तक भोली दिदी (सुहासिनी) को रंचमात्र भी नहीं था, किंतु मेरे नयनों की भाषा को पढने वाले ने ठीक ही पढ लिया था । दूध के गिलास के साथ - साथ मेरी कांपती अंगुलियां थामकर दबा देना, खाने की मेज पर आमने-सामने बैठते ही अपने पैरों के बलिष्ठ पंजों में मेरे दोनों पैर बन्दी बना लेना, पर्दे की आड का बहाना बना, जानबूझकर टकराना, ' सारी-सारी ' कह, मेरी ओर देख सहसा एक आँख मूँद लेना जैसे नित्य एक एक रसीले पाठ पढा मेरा विनोदी प्रणयी मुझे प्रेम की संकरी अली-गली

---

१ छि: मम्मी, तुम गंदी हो - (अपराधिनी) - शिवानी - पृ.सं.५१

में आँखों में पट्टी बांधकर घुमाता चला जा रहा था ।'[1]

'मन का प्रहरी' में अपने से आधी उम्र के अपने छात्र प्रियतम महंती से विवाह करनेवाली प्रा.अनुराधा पटेल विवाह का एक वर्ष प्रियतम महंती के साथ कांटिनेंट के दौरे में बिताती हैं । वह उस लम्बी, मधुयामिनी में अपने वर्षों के दबे सारे अरमान पूरे कर लेती हैं । पानी की भाँति पैसा बहाती, वह प्रियतम महंती को भृंगकीट की भाँति छाती से चिपकाए देश विदेश के आकाशों में उडती रहती हैं और इसी विश्वव्यापी हनीमून के बीच उसे अचानक मिल जाता हैं उसका पुराना प्रेमी मधुकर । भाग्य उन्हें एक ही होटल के अगल बगल के कमरों में खींच लाता हैं । प्रियतम को उसके बारे में कुछ मालूम हैं । अपने एकान्त के बीच अपनी सहचरी के पुराने प्रणयी की घुस-पैठ उसे बेहद अखरने लगती हैं । संशय का रूपान्तर जब विश्वास में हो जाता हैं । वह कहता हैं --' बरामदे में टहल रही थीं या बगल के कमरे में ?'[2] वह लपककर उसके कटे बाल पकडकर खींच लेता हैं । उस दिन वह अनु को इतना मारता हैं कि उसकी एक आँख सूजती हैं, होंठ कट जाते हैं । वह बेरहमी से अनु को मारता हैं । वह उसकी क्षमा माँगती हैं -' मुझे क्षमा करो प्रियतम । मैं कसम खाती हूँ कि मैं अब कभी मधुकर का मुँह भी नहीं देखूंगी ।'[3]

'भिक्षुणी' कहानी की नायिका 'किकी' अपनी समृध्द गृहस्थी पर लात मारकर किस तरह अपने प्रेमी के साथ भाग जाती हैं लेखिका के शब्दों में देखिए - ' फिर एक दिन अचानक सुना, अपनी समृध्द गृहस्थी को स्वयं लात मारकर किकी अपने कैशोर्य के प्रेमी के साथ मुँह काला कर भाग गई हैं । ... उसका वह दु:साहस और निर्लज्ज आचरण मुझे भी स्तब्ध कर गया । क्या अभागी को पुत्री के भविष्य

---

१ भोलनी (गँडा) - शिवानी - पृ.सं.६५ ।

२ मन का प्रहरी (गँडा) - शिवानी - पृ.सं.१३१ ।

३ - वही - पृ.सं.१३१ ।

के लिए भी ममता नहीं हुई होगी ? सयानी होगी तो लोग अंगुली उठा-उठाकर कहेंगे - इसीकी माँ अपने प्रेमी के साथ भाग गई थी ।' [१]

इस तरह 'परकीया' नायिका भेद के अन्तर्गत 'चन्नी' कहानी की चन्नी और 'निर्वाण' की मनोरमा चोपडा का भी अन्तर्भाव हम कर सकते हैं ।

(३) सामान्या

धन अथवा वासना के लिए वार विलास करनेवाली 'सामान्या' श्रेणी की नायिकाओं में हम सर्व प्रथम शिवानी की कहानी 'साधो ई मुर्दन कै गाँव' की नायिका 'मरगी' का अंतर्भाव कर सकते हैं ।

'साधो ई मुर्दन कै गाँव' की नायिका मरगी को 'सामान्या' नायिका-भेद के लक्षण लागू होते हैं । मरगी - 'जीवन के बीस,वर्षों में ही वह, पूरे चौदह गृहों की परिक्रमा कर आयी थी । भारत की वह प्रथम नववधू थी, जिसका कभी द्विरागमन नही हुआ ।' [२] 'नये पति का विश्वास, वह अपने स्वस्थ यौवन का ब्रह्मास्त्र छोडते ही प्राप्त कर लेती । कहाँ क्या धरा है, जानने में फिर उसे विलम्ब नहीं होता। मरी सौत के अंकना,कंकना या सास की जीर्ण पोटली में छिपी सम्पति, कृपण वृध्द पति की चूल्हे के नीचे गाडी गई धनराशि वह एक दिन लेकर सहसा चम्पत हो जाती ।' [३]

'चांद' कहानी की नायिका चांद ग्राहकों को किस तरह आकर्षित करती है 'अपने शोख नीले रंग के गरारे घेरदार को, किसी नृत्यप्रवीणा बाई जी की-सी कुशल घुमेर के साथ फैलाकर,वह अपने प्रिय टीले पर बैठी थी । बैंगनी कमीज के चटख गुलाबी रंग की पारदर्शी झालर के बीच, उसका दु:साहसी निर्लज्जता से किया गया उन्मुक्त यौवन प्रदर्शन देख किसी भी संस्कारी कुलवधू के तन-बदन में आग भडक

---

१ भिक्षुणी (कैंजा) - शिवानी - पृ.सं.११८ ।

२ साधो,ई मुर्दन कै गांव (अपराधिनी) - शिवानी - पृ.सं.७५ ।

३ - वही - पृ.सं.५५ ।

सकती थी । फिर भी न जाने उस कलूटी के चेहरे में क्या आकर्षण था कि जो भी उधर से गुजरता, उसे एक बार मुड़कर देख ही लेता ।`[१]

‘चांद के पति अंगुलियों पर नहीं गिने जा सकते । सचमुच ही, क्या नहीं किया था इस अभागी ने । पहले कर्नल सोनी की गृहस्थी में विष घोला, मिसेज सोनी के यहाँ आया बनकर गई और तीसरे ही महीने उनकी सौत बनकर लौटी... फिर उस मद्रासी इन्जीनियर के साथ नाक कटवाई ।`[२]

चांद केवल खीर मिष्ठान ही नहीं चखती, भुने चने, लाई से भी परहेज नहीं है अभागी को, अर्थात् साइकिल रिक्शावालों आईस्क्रिमवालों पर भी वह मेहरबानी करती है ।

`तोप` कहानी की नायिका क्रिश्चियाना वेरानिका टॉमस का किस्सा कुछ और ही है । धन के साथ वासनापूर्ति के लिए वह वार विलास करती है । लेखिका कहती है -- `जिन गोरों को देखकर पहाड के पुरुषों के भी छक्के छूट जाते थे, उन्हीं से तोप की मैत्री के रहस्य को मैं समझ ही नहीं पाती थी, फिर शायद समझने की मेरी उम्र भी नहीं थी । संध्या होते ही तोप का दरबार जुट जाता, नंगी छातियों पर `आई लव यू` का गोदना गुदाये, आस्ट्रेलियन लम्बे भूत-से गोरे, तोप को गोद में उठाकर ऊँचे स्वर में गाने लगते । कभी उसे चूम-चूमकर हवा में गेंद की भाँति उछाल देते । बडी रात तक उनकी हा-हा, ही-ही चलती रहती ।`[3]

फौज से छुट्टी पाकर वह अपने `मेकन ओक्स` बंगले में एक रेस्ट - हाउस

---

१ चांद (अपराधिनी) - शिवानी - पृ.सं.९३ ।

२ - वही - पृ.सं.९८ ।

३ तोप (मेरी प्रिय कहानियाँ) .- शिवानी - पृ.सं.१२१ ।

शुरू करती हैं । जिन मरीजों को सैनेटोरियम से छुट्टी मिलती है वे वहाँ आते हैं । उन्हीं मरीजों में से राजेन्द्र नाम के इक्कीस वर्षीय प्रतिभाशाली वैज्ञानिक से वह पचास वर्ष की आयु में विवाह करती हैं । राजेंद्र की मृत्यु के बाद सैम्युअल से वह विवाह कर लेती हैं ।

इस तरह मरगी,चांद और क्रिश्चियाना वैरानिका टॉमस का `सामान्या` नायिका - भेद के अन्तर्गत हम अन्भाव कर सकते हैं ।

••

वर्ग-३

" पति प्रेम के अनुसार
शिवानी की कहानियों की नायिकाओं का वर्गीकरण "

प्रस्तुत वर्ग का एकमात्र आधार नायिका के प्रति पति के प्रेम की न्यूनता अधिकता ही हैं, परन्तु यह वर्गीकरण अत्यंत गौण हैं ।[१] इस वर्ग के अन्तर्गत नायिकाओं के दो प्रकार माने जाते हैं । (१) ज्येष्ठा और (२) कनिष्ठा ।

(१) ज्येष्ठा - जिसके प्रति पति का प्रेम अधिक होता हैं ।

(२) कनिष्ठा- जिसके प्रति पति का प्रेम कम होता हैं ।

(१) ज्येष्ठा

`जा रे एकाकी` की नायिका चनुली इस वर्ग में आ जाती हैं । `चनुली का विवाह हुआ था स्वयं पति की इच्छा से । अपने सीढी-से बने खेत पर खडे उस बाँके कुमाउनी जवान ने सुन्दरी चनुली को बकरियाँ चराते देखा था । निर्णय लेने में उसने फिर विलंब नहीं किया ।`[२]

विवाह के बाद पन्द्रह दिन बीत जाते हैं । इसी बीच सीमांत का चीनी युध्द नवेली चनुली के फौजी पति को बुला लेता हैं । वह दुबारा लौटता नहीं । अपने फौजी पति के लौटने की प्रतीक्षा में चनुली अपनी प्रतिवेशिनी द्वारा साम्राज्य को दी गई गाली बरदाश्त नहीं करती । उसके हाथों से दरांती छूट जाती हैं और प्रतिवेशिनी की हत्या हो जाती हैं । वह कारावास में आजन्म कारावास की सजा भुगतने लगती हैं ।

इसी बीच किसी हिन्दी फिल्मी नायक की भाँति उसका प्रणयी पति सहसा आकर उपस्थित हो जाता हैं । प्रस्तुत हैं उसके पति के प्रेम की झलक ...

---

१ रीति काव्य की भूमिका - डॉ.नगेंद्र - पृ.सं.१३८ ।

२ जा रे एकाकी (अपराधिनी) - शिवानी - पृ.सं.३३ ।

उसने न्यायालय में अपील की, यदि दयालु न्यायाधीश उसकी पत्नी को छोड दें, तो वह उसे ग्रहण कर लेगा । दोष उसकी पत्नी का नहीं था, उसकी कर्कशा प्रतिवेशिनी ने ही उसे उकसाया था ।` [1]

`साधो ई मुर्दन के गाँव` की` वह` एक डकैत की पत्नी थी । अपने पिता की आयु का उसका पति डाके डालकर आता तो जंगल में मंगल हो जाता ।.... `एक बडे से कडाही में फिर सोने के उन आभूषणों को खौलाकर,खोए-सा घोट दिया जाता । गलाई गई उस सुवर्णराशि से फिर नवीन आभूषणों की सृष्टि होती । इस प्रकार वह दस्युदल की पटरानी नित्य नवीन आभूषणों से जगमगाती रहती ।` [2]

पति अपने जानलेवा दौरों से लौटता,तो मानसिक तनाव से छुटकारा पाने, पत्नी को ले न जाने कहाँ-कहाँ घूमने निकल जाता । नई चमचमाती कार किसी अंधेरी गली में उनकी प्रतीक्षा कर रही होती । नई साडी और नये आभूषणों की छटा विकीर्ण करती वह वनलक्ष्मी अपने दस्यु प्रियतम की वामांगी बनी हवा में कार भगा देती । कभी जाते बरेली,कभी लखनऊ और कभी कानपुर ।` [3]

`मन का प्रहरी` की नायिका प्रा.अनुराधा पटेल पैंतालीस वर्ष की आयु में इक्कीस वर्षीय अपने छात्र प्रियतम महंती से विवाह करती है । विवाह का एक वर्ष पूरे कॉण्टिनेंट के दौरे के परम आनन्द में कट जाता है । अनुराधा पटेल उस लम्बी मधुयामिनी में अपने वर्षों के दबे सारे अरमान पूरे कर लेती है । `पानी की भाँति पैसा बहाती, वह प्रियतम महंती को भृंगकीट की भाँति छाती से चिपकाए देश-विदेश के आकाशों में उडती रही थी ।` [4]

अनुराधा पर उसके पति का इतना प्रेम है कि जब वह उसे छोडकर चली जाती

---

१ जा रे एकाकी - (अपराधिनी) - शिवानी - पृ.सं.३६ ।

२ साधो ई मुर्दन के गांव - (अपराधिनी) - शिवानी - पृ.सं.६९ ।

३ - वही - पृ.सं.६९ ।

४ मन का प्रहरी (गेंडा) - शिवानी - पृ.सं.१३० ।

हैं, तो वह कहने लगता है -`मैं उसके बिना एक पल भी नहीं जी सकता ... एक पल भी ।` [१]

इस तरह `ज्येष्ठा` नायिका भेद के अन्तर्गत `प्रतीक्षा` की माधवी, `मामाजी` की रोहिणी, ज्येष्ठा की पिट्ठी उर्फ हरिप्रिया, `शपथ` की शुभ्रा, `शर्त` की रमा और `मित्र` कहानी की राधा का भी हम अन्तर्भाव कर सकते हैं ।

(२) कनिष्ठा

`अलख माई` की एक नायिका लछमी उर्फ लक्ष्मी अपनी कुरूपता के कारण पति प्रेम से वंचित होती है अत: वह कनिष्ठा नायिका का उत्तम उदाहरण है । लक्ष्मी को इसी कुरूपता के कारण सास और पति की अन्यायपूर्ण बातें और व्यवहार सहना पड रहा था । उसने अपनी कहानी बताना शुरू किया - `माई का चेहरा ही ऐसा है बेटी` .... नाम था लछमी और ब्याह होकर आई तो सासने घूँघट उठाते ही कहा, अरे यह तो लछमी नहीं लछमीसिंह ब्याह लाया है रे तू आन सिंह ।` [२]

इसका परिणाम लक्ष्मी के ही शब्दों में --`उसी दिन से हरामी हमारा दुश्मन बन गया ।... घर आता नशा में चूर, जोगी माई को कभी सास मारता, कभी मरद । कभी कहता `लकडी ला` कभी कहता `घास काट ला` कभी भूखाप्यासा माई को ( लछमी को ) भैंस चराने भेज देता जंगल ...` [३]

`चांद` कहानी की मानवी को भी पति का प्रेम नहीं मिलता । `मानवी ने स्वेच्छा से ही प्रौढ दुहेजू ने.के.के कण्ठ में वरमाला डाली थी । जिस व्यक्ति के कठोर व्यक्तित्व पर वह रीझी थी, वही धीरे-धीरे उसके लिए अभिशाप बन बैठा ।

---

१ मन का प्रहरी (गैंडा) शिवानी - पृ.सं.१३० ।

२ अलख माई (अपराधिनी) - शिवानी - पृ.सं.८३ ।

३ - वही - पृ.सं.८५ ।

मानवी को शोख रंगों में लगाव था, और जे.के.लाल रंग देखते ही सांड-सा भड़क उठता.... कभी कोई जलसा होता तो मानवी बड़ा-सा जूड़ा बनाकर बेले का गजरा लगा लेती और फौरन ही जे.के.तुरन्त लगा देता ' क्यों , कोठे में बैठने जा रही हो क्या ?' [1]

' ज्यूडिथ से जयन्ती ' की रमा का विवाह एक दुहेजू से होता है । उसे किसी प्रकार का सुख इस पति से नहीं मिलता । रात-भर,वह अपनी पहली पत्नी के प्रति किए गए,अपने विश्वासघात के पश्चाताप में ही सिसकता रहा - ' हाय उसने बीमारी में कितना दु:ख सहा । और मैं अभागा उसकी स्मृति को भुला आठवें ही महीने, फिर मौर बाँधकर दूल्हा बन गया ।' [2]

रमा के बारे लेखिका का कथन देखिए - ' वैसे तो रमा ' दी, नाम में ही नहीं, गुणों में भी साक्षात् रमा थी । ... पीढ़े पर बैठकर तो, सचमुच ही साक्षात् अन्नपूर्णा आकर,उनके कराग्र में बैठ जाती और उनकी लम्बी - लम्बी अंगुलियों से रस टपकाने लगती ... पर मजाल है जो हमारे अरसिक जीजाजी ने कभी ' वाह ' भी कहा हो । खा-पी पल्ला झाड़ते उठते,और एक न एक नाम धर ही देते ।' [3]

' मौसी ' कहानी की नायिका तिला उर्फ मिसेज बेदी घरवालों के लाख समझाने पर ब्रिगेडियर बेदी से आंतरजातीय विवाह करती है पर अब उसे पछतावा हो रहा है । ... ' ब्रिगेडियर उनके दो बेटों का बाप था, पर फिर भी पति को देखकर घृणा से उनका अंग प्रत्यंग सिहर उठता । कभी इसी व्यक्ति के पीछे दीवानी होकर भूख,प्यास,मार,लांछना सब भूल गई थीं । आज कपूर की लौ की ही भांति उनके प्रेम की लपट उड़ गई थी। बेदी सात दिन घर रहा था पर उनके कमरे में सोया केवल एक दिन, बाकी छ: दिन उसने छ: विभिन्न नारियों के संसर्ग

---

१ चांद - (अपराधिनी) - शिवानी - पृ.सं.१०६ ।
२ ज्यूडिथ से जयन्ती (कैंजा) - शिवानी - पृ.सं.६७ ।
३ ज्यूडिथ से जयन्ती (कैंजा) - शिवानी - पृ.सं.६९ ।

में हंस-खेलकर गुजार दिए थे।`[1]

इस तरह, `कनिष्ठा` नायिका भेद के अन्तर्गत `प्रतीक्षा` कहानी की माधवी, `श्राप` की दिव्या, `प्रतिशोध` की सौदामिनी, `अभिनय` की जीवन्ती, `अपराजिता` की आरती सक्सेना, और `सौत` की नीरा का भी अन्तर्भाव हम कर सकते हैं।

---

१ मौसी (कैंजा) - शिवानी - पृ.सं.१७० ।

वर्ग-४

प्रकृति । गुण के अनुसार
शिवानी की कहानियों में नायिकाओं का वर्गीकरण
प्रस्तुत वर्ग का आधार प्रकृति (स्वभाव) अथवा गुण है ।

इस वर्ग में तीन प्रकार की नायिकाएँ आती हैं ----

(१) उत्तमा
(२) मध्यमा
(३) अधमा ।

(१) उत्तमा

अन्यासक्त नायक का भी हित चाहने वाली नायिका ` उत्तमा ` श्रेणी की होती है, जिसका एक उत्तम उदाहरण है ` चनुली ` ।

` जा रे एकाकी ` की नायिका चनुली से उसका फौजी पति मुँह फेर लेता है, फिर भी वह उसे दोष नहीं देती है । जिसके लिए वह प्रतिवेशिनी की हत्या करती है और आजन्म कारावास की सजा भुगतने लगती है उसके लिए कारागृह में पन्द्रह अगस्त के अवसर पर आज भी वह यह गीत गाती है ---

पल्टनों को बाजे बाजन लागो
झोला तम्लोटा साजन लागो
ओ मेरी इजा, पर्क दे खीरा
लडना सूं जांछ - कुमय्यां बीरा[१]

---

१ जा रे एकाकी (अपराधिनी) - शिवानी - पृ.सं.४० ।

पल्टनिया बाजा बजने लगा है, फौजी झोले तमलोटों से सजा वीर रणबांकुरा युध्द में जा रहा है - अरी मेरी माँ, तू जल्दी खीर तो पका दे, तेरा कुमय्यां वीर लड़ने जा रहा है ।

`अलख माई` की रजुला अर्थात `करिए छिमा` की हीरावती को गाँव के एक प्रतिष्ठित व्यक्ति श्रीधर द्वारा अवैध मातृत्व प्राप्त होता है परंतु श्रीधर की प्रतिष्ठा पर वह आँच नहीं आने देती । नवजात शिशु को वह अलकनंदा में डुबो देती है ।

`ज्यूडिथ से जयन्ती` की रमा पति द्वारा अवमानित होकर भी उससे घृणा नहीं करती उसकी सेवा ही करती है । 'अनाथ' की ऐनी को छोडकर उसका प्रेमी पति बनर्जी चला जाता है फिर भी ऐनी उसे दोषा नहीं देती ।

इस तरह, `तुलादान` की रोजी, `पिटी हुई गोट` की चन्द्रो, `शायद` की कुसुम, `प्रतिशोध` की सौदामिनी, `अभिनय` की जीवन्ती, `घण्टा` की लक्ष्मी, और `अपराजिता` की आरती सक्सेना का भी अन्तर्भाव `उत्तमा` - नायिका भेद के अन्तर्गत हम कर सकते हैं ।

(२) <u>मध्यमा</u>

नायक के अनुसार हित अहित करनेवाली नायिका `मध्यमा` श्रेणी की होती है ।

`चलोगी चन्द्रिका` की नायिका चन्द्रिका चन्द्रवल्लभ से प्रेम करती है परंतु उसके पिता उसका विवाह सदानन्द से निश्चित करते हैं । चन्द्रिका जानबूझकर ही चन्द्रवल्लभ के सामने लज्जासक्ति आग्रह से सदानन्द की अभ्यर्थना करती है -- ये आलू के गुटके खाइए ना ?`` चन्द्रवल्लभ भुनकर एकदम कोयला हो जाता है । सदानन्द को क्या पसन्द है, यह भी याद रखती है छोकरी । तब उसे इस बात का

---

१ चलोगी चन्द्रिका (गैंडा) - शिवानी - पृ.सं. ८९ ।

आश्चर्य होता है कि अपना दिया हुआ रूमाल फिर वह कमर में खोंसे क्यों फिरती है ?

`ज्येष्ठा` कहानी की नायिका पिरी उर्फ हरिप्रिया पहले तो अपने जेठ राजेश की मृत्युकामना करती है परंतु वही हरिप्रिया देवेश की मृत्यु के बाद राजेश से विवाह करती है ।

`बन्द घडी` की नायिका माया पहले तो अपने पति के सख्त और अनुशासन-प्रिय स्वभाव से ऊब जाती है और आत्महत्या करने के लिए प्रस्तुत होती है, परंतु बन्द घडी के कारण आत्महत्या का समय टल जाता है । बाद में उसे अपने पति के हँसमुख स्वभाव के दर्शन होते हैं तब उसका गृहस्थ-जीवन सुखी होता है ।

नायक द्वारा अहित होने पर `चांद` कहानी की नायिका मानवी अपना घर और पति त्याग देती है । `अलखमाई` की लछमी उर्फ लक्ष्मी पति और सास के अन्याय को सहन नहीं कर सकती । एक एक करके उनकी वह हत्या करती है । `चन्नी` कहानी की नायिका चन्नी अपने पति की सख्ती को बरदाश्त नहीं करती और पूर्व आश्रम के प्रेमी के साथ भाग जाती है ।

`मग्गी` का उदाहरण अलग प्रकार का है । वह अबतक जिस घर में ब्याहकर गई वहाँ का सब कुछ लूटकर ले आयी पर चौदह विवाह करके पंद्रहवी बार वह एक लुहार को वह धोका नहीं दे सकी । उस लुहार के और उसकी माँ के प्रेम के कारण मग्गी वहाँ से दुबारा नहीं भाग सकी ।

(३) अधमा

नायक द्वारा हित करने पर भी उसका अहित करनेवाली `अधमा` श्रेणी की होती है । इस प्रकार की नायिका निर्दयी और सहानुभूतिशून्य होती है ।

इस श्रेणी की नायिकाओं में छि: मम्मी तुम गंदी हो` की नायिका जानकी, `चांद` की चांद, `भिक्षुणी` की किर्सी, पुष्पहार की दुर्गी, `के` की डॉक्टर

कमला, 'निर्वाण' की मनोरमा चोपडा और 'मन का प्रहरी' की प्रा.अनुराधा पटेल का अन्तर्भाव करना आवश्यक होगा ।

जानकी अपने प्रेमी की मदद से पति की हत्या करती हैं । चांद पर जान न्योछावर करनेवाले हर एक शख्स को वह धोका ही देती हैं । किसी अपनी समृध्द गृहस्थी पर लात मार कर अपने प्रेमी के साथ भाग जाती हैं । डॉक्टर कमला अपने पति की सहेली किशोरी की हत्या करती हैं । निर्वाण की मनोरमा चोपडा घर में बुखार से बीमार अपने लडके को छोडकर भोंदू महाराज के साथ भाग जाती हैं । प्रा. अनुराधा पटेल अपने पति प्रियतम महंतो को छोडकर अपने प्रेमी मधुकर के साथ भाग जाती हैं ।

इस प्रकार की नायिकाएँ अपनी गृहस्थी का खयाल नहीं करती । इनमें स्वार्थ और अहंकार भरपूर होता हैं । ये जिद्दी स्वभाव की होती हैं इस निष्कर्ष पर हम पहुँच जाते हैं ।

••

वर्ग-५

वय के अनुसार

शिवानी की नायिकाओं का वर्गीकरण

प्रस्तुत वर्ग में तीन प्रकार की नायिकाएँ आती हैं ---

(१) मुग्धा

(२) मध्या

(३) प्रौढा ।

मुग्धा

मुग्धा में लज्जाधिक्य और उत्कण्ठा की न्यूनता पाई जाती हैं । प्रस्तुत प्रकार की नायिकाओं में ` लाटी ` कहानी की बानो, ` दण्ड ` की चांदमनी , ` पुष्पहार ` की दुर्गी और ` प्रतीक्षा ` की माधवी का अन्तर्भाव हम कर सकते हैं ।

` लाटी ` कहानी की नायिका बानो का विवाह पन्द्रह वर्ष की आयु में ही कप्तान जोशी से होता हैं । विवाह के ठीक तीसरे ही दिन कप्तान जोशी को बसरा जाना पडता हैं । ` इन तीन दिनों में, खाकी वर्दी में कसे छह फुटे शरीर और भूरी-भूरी मूंछों को देखकर बानो उससे जितना ही कटी-कटी छिपी फिरती, वह उसे पाने को उतना ही उन्मत हो उठता । उसे देखते ही वह अपने मेहंदी लगी नाजुक हथेलियों से लाज से गुलाबी चेहरा ढांक लेती । ` [१]

` दण्ड ` कहानी की नायिका चांदमनी सोलह वर्ष की हैं । वह चौबीस वर्ष के डॉ. सिंह से प्रेम करती हैं । उनका परिचय धीरे धीरे बढता जाता हैं । .... ` पहले दिन, अपनी छाती और पीठ की नग्नता का स्मरण कर वह लज्जा से लाल पड गया था और नाइटकोट ढूँढने छटपटा उठा था, अब स्वयं ही वह अपने पौरुषा

---

१ लाटी (कृष्णवेणी) - शिवानी - पृ.सं.७० ।

का दर्पण , उस किशोरी की आँखों पर डाल उसे बाँधिया देता और वह मुग्धा एकटक उसकी नंगी छाती को देखती रहती ।' [1]

मुग्धा में लज्जा की अधिकता और उत्कण्ठा की न्यूनता होती है परंतु चांदमनी इसके लिए अपवाद है । चांदमनी जबसिंह के कमरे में घुस जाती है, तो ' उसके मोती जैसे उजले दाँतों की मनोहारी पंक्ति को पहले सिंह देखता रहा, फिर अचानक उसे स्मरण हो आया कि वह केवल नाइटसूट का पायजामा ही पहनकर सो रहा था । उसका चेहरा लाल हो गया । कैसी बेहया लड़की थी यह , उसका नग्न शरीर कैसी मुग्ध दृष्टि से देख रही थी ।' [2]

' पुष्पहार ' कहानी की नायिका दुर्गी को मनाने का प्रयास उसका प्रेमी मंत्री करने लगता है । ' पर वह रूठी गर्वीली राजकन्या-सी निःशब्द उसी टीले पर बैठी रही । उस मुग्धा मानिनी की अनूठी छवि मंत्री के वर्षों से अंधकारपूर्ण हृदयकक्ष में बिजली-सी कौंध गई । घुटनों से कुछ ही नीचे तक लटका काला लहंगा किसी विदेशी आधुनिका की मिनी स्कर्ट के-से औदार्य से साँचे में ढली नंगी सफेद टांगों का उन्मुक्त प्रदर्शन कर रहा था । दोनों हाथों से गोदी में नन्हें मेम्ने को साधे वह सौंदर्य - लक्ष्मी ऐसे तनकर टीले पर बैठी थी कि स्लेटी पत्थर का रूखा टीला रत्नखचित राजसिंहासन-सा दीप्त हो उठा था ।' [3]

' प्रतीक्षा ' की माधवी-अचानक अपने सम्मुख विमल जोशी को खड़ा देखकर हड़बड़ाकर उठ जाती है ।..... ' मैं रोज इस चट्टान पर बैठकर, कालाढुंगी की नई सड़क को देखती हूँ, देखिए न कितनी सुन्दर लगती है, एकदम प्रश्न का चिह्न ।'

वह हंसी और उसकी निर्दोष हंसी आँखों से छलकती उसके पूरे चेहरे को भिगो गई ।

---

१ दण्ड -(' किशनुली ') - शिवानी - पृ.सं.११० ।

२ दण्ड (गेंडा) - शिवानी - पृ.सं.१०८ ।

३ पुष्पहार - (मेरी प्रिय कहानियाँ) - पृ.सं.४३ ।

'खाना खा लिया ?' उसने पूछा ।

'नहीं,' विमल ने सामान्य रसिकता करने की चेष्टा की,
'आप तो आई नहीं, खाता कैसे ?'

माधवी, पहले बडी-बडी आंखें पूरे चेहरे पर फैलाकर, अबोध शिशु की भाँति उसे देखती रही, फिर रसिकता का सूत्र हाथ में आते ही ठठाकर हंस पडी, 'देखिए न, मैं बार बार भूल जाती हूँ कि कांटा किस हाथ में पकडा जाता है, इसीसे नहीं आई ।' [१]

इस तरह, 'तुलादान' की रोजी, 'अनाथ' की ऐनी और 'अभिनय' की जीवन्ती का भी अन्तर्भाव 'मुग्धा' नायिका भेद के अन्तर्गत हम कर सकते हैं ।

(२) मध्या

मध्या में लज्जा और उत्कण्ठा दोनों तत्व समकोटिक होते हैं । 'जा रे एकाकी' की नायिका चनुली को अपने बिछुडे पति से मिलने की उत्कण्ठा भी है और पति के बारे में जेठ से पूछते समय शरमाती भी है । लेखिका और चनुली का संवाद देखिए ---

" क्या वह तुमसे मिलने भी आया ?' मैंने पूछा ।
'नहीं मेरी सास ने उन्हें नहीं आने दिया ... पर उनकी चिट्ठियाँ ...' अधूरे वाक्य के बीच ही उसका चेहरा गुलाबी पड गया, दोनों घुटनों में सिर डालकर वह चुप हो गई .....
'किन्तु इधर दो सालों से उनकी एक भी चिट्ठी नहीं आई, एक बार जेठजी आए थे ।'
'तुमने उनसे पूछा नहीं ?' मैंने कहा ।
'पूछती कैसे दीदी, मुझे शरम जो आती थी ।' [२]

प्रतीक्षा (कृष्णावेणी) - शिवानी - पृ.सं.५८ ।
जा रे एकाकी (अपराधिनी) - शिवानी - पृ.सं.३६ ।

इस तरह `मध्या` नायिका भेद के अन्तर्गत `साधो ई मुर्दन के गाँव` की मरगी, `भीलनी` की विलासिनी और `पिटी हुई की गोट` की चन्दो का भी अन्तर्भाव हम कर सकते हैं ।

(३) प्रौढा

प्रौढा में लज्जा की न्यूनता तथा उत्कण्ठा की अधिकता पाई जाती है ।

`मन का प्रहरी` की नायिका प्रा.अनुराधा पटेल का वर्णन देखिए -- `अवस्था ढल रही थी, किन्तु अस्तगामी सूर्य का अस्तप्राय तेज पूरे चेहरे को रंगकर अस्वाभाविक रूप से तेजस्वी बना रहा था । उन बडी-बडी स्निग्ध आँखों का तीव्र तेज अब भी किसी प्रणयी पुरुष को झुलसा सकता था । उस प्रौढा के अंग-प्रत्यंग से यौवन की छलनामयी मादकता जैसे छलक पड रही थी ।`[१]

प्रा. अनुराधा पटेल अपने एक छात्र `प्रियतम महंती` से विवाह करती है तो लेखिका कहती है, `छि:छि: मुंह काला करना ही था, तो क्या वही अनाथ,अबोध छोकरा रह गया था । समय पर विवाह हुआ होता, तो इतना बडा तो उसका पुत्र ही होता, बल्कि इससे भी चार-पांच वर्ष बडा - मैं चालीस वर्ष की हूँ - उसने स्वयं मुझसे कभी कहा था । कोई स्त्री क्या कभी किसी दूसरी स्त्री को अपनी ठीक वयस के कंधे पर हाथ धरने देती है ? कम से कम पैंतालीस की तो होगी ही ।`[२]

महंती का साथ वह एक वर्ष में ही छोड देती है और अपने पुराने प्रेमी मधुकर के साथ भाग जाती है । महंती लेखिका को बताता है, `विवाह का एक वर्ष पूरे कांटिनेंट के दौरे के परम आनंद में कट गया - अनु ने उस लम्बी मधुयामिनी में अपने वर्षों के दबे सारे अरमान पूर कर लिए थे ।`[३]

---

१ मन का प्रहरी (गैंडा) - शिवानी - पृ.सं.११६-११७ ।

२ - वही - पृ.सं.१२८ ।

३ - वही - पृ.सं.१३० ।

'के' कहानी की नायिका डॉक्टर कमला की कहानी प्रा.अनुराधा पटेल से मिलती जुलती है। अपने आश्रय में रह रहे एम.एस.सी.फाइनल के छात्र शेखर से जब डॉक्टर कमला विवाह करती है तो पूरे शहर में तहलका मच जाता है। कोई कहता, 'अधेड डॉक्टरनी की मति मारी गई है। जवान छोकरे की लुटिया ही डुबो दी।' कोई शेखर को ही दोष्ा देता,' क्या कोई बच्चा था, जो जलेबी खिलाकर फुसला लिया।'[१]

अधेड डॉक्टरनी अब घडल्ले से अपने नौजवान पति को लिए घूमने लगी। अब वह अपने सफेद बालों के बीच सीधी मांग निकाल आध पाव सिन्दूर बिखेरने लगी, पैरों में बिछुए पहन लिए,यहाँ तक कि उसने नाक छिदवाकर हीरे की एक लौंग भी डाल ली।... छोकरे-से पति के साथ वह सिर ढांक-ढंककर परिचित मित्रों के अभिवादन का सलज्ज प्रत्युत्तर ही नहीं देती, अपने पति का निर्लज्ज परिचय भी दे डालती,' इनसे मिलिए,मेरे पति शेखर कुमार।'[२]

'तोप' कहानी की तोप उर्फ क्रिश्चियाना वेरानिसा टॉमस की आयु पचास वर्ष की है। उसने मुवाली में एक सैनेटोरियम खोला है। वह अपने सैनेटोरियम के एक मरीज का लेखिका से परिचय कराती है,' आजकल एक है बेचारा, एम.एस.सी. फर्स्ट क्लास फर्स्ट, रिसर्च कर रहा था कि यह रोग लग गया। सैनेटोरियम के लिए पैसा नहीं था, तो हम बोला - कोई बात नही, बाबा,इधर चला आओ।... तोप के पास बडा दिल है।'[३]

वह उसकी प्रशंसा करती है,' बडा शर्मीला है हमारा राजेन्द्र।' भगवान ने चाहा,तो किसी दिन फिजिक्स का नोबल प्राइज लेगा...।'[४]

सात-आठ महीने बाद लेखिका को एक बडा प्यारा-सा क्रिसमस कार्ड आता है,

---

१ के (मेरी प्रिय कहानियाँ) - शिवानी - पृ.सं.५९।

२ - वही - पृ.सं.५९।

३ तोप (मेरी प्रिय कहानियाँ) - शिवानी - पृ.सं.१२६।

४ - वही - पृ.सं.१२७।

नीचे लिखा होता है, ' शुभकामनाओं सहित,तोप और राजेन्द्र ।'

तुरंत आठवें दिन एक तार आता है -- ' आगरा का ताज देखने हम आ रहे हैं ।' फिर वही तोप और राजेन्द्र ।

आग्रा पहुँचने पर तोप लेखिका से बोलती है' अपने शाहजहाँ को आगरा का ताज दिखाकर हनीमून इन ऑगरेट करेगा, है ना डार्लिंग '

इस पर लेखिका कहती है,' मुझे काटो तो खून नहीं । कहाँ पचास वर्षा की अधेड तोप, कहाँ अपने यौवन के हीरे-सा देखने वालों की आँखें चौंधियाता वह सुदर्शन युवक ।' [1]

तोप (मेरी प्रियकहानियाँ) - शिवानी - पृ.सं.१२ ।

वर्ग - ६

* दशा के अनुसार
शिवानी की कहानियों की नायिकाओं का वर्गीकरण *

प्रस्तुत वर्ग में तीन प्रकार की नायिकाओं का अन्तर्भाव होता है ---

(१) अन्य सुरति दु:खिता
(२) मानवती
(३) गर्विता ।

(१) अन्य सुरति दु:खिता --

नायक के साथ प्रेम करनेवाली अन्य नायिका को देख दुखित होनेवाली नायिका इस श्रेणी के अंतर्गत आ जाती है ।`[१]

`चांद` कहानी में मानवी जब मैके से लौटती है तब उसे अचानक अपने शयनकक्ष के कुछ संसर्ग चिह्नों को देखकर पता चलता है कि उसके पति जे.के.का घर की नौकरानी चांद से अवैध संबंध है ।

मानवी इस बात से बहुत दु:खी हो जाती है । वह लेखिका से कहती है, `यह देखो ।` उसने गिलट के घुंघरू जडे कई कांटे लेखिका के पैरों के पास फेंक दिए । `मुझे ये जे.के. के तकिये के नीचे मिले । ये न कभी मिलते तब भी मैं समझ गई थी । इतने दिनों बाद मैं लौटी और वह पीठ फेरकर सो गया । ठीक जैसे भरे पेट शिशु सोता है । मैं तकिया सिसकाने लगी तो ये कांटे -` उसका कण्ठ एक पल को बाष्पस्तम्भित हुआ, पर फिर वह आवेगहीन स्वर में कहने लगी, `वह (चांद) हमेशा जूडे के कांटे खोलकर सिरहाने रखकर सोती थी । कई बार मेरे कमरे में भी तो

---

१ शास्त्रीय समीक्षा केसिध्दान्त (१) - गोविन्द त्रिगुणायत - पृ.सं.२३७

सोई थी । कहती थी, ' कांटे गडते हैं ममी, जब तक खोलकर तकिये तले न धर लूँ, नींद नहीं आती ...।' आंसू की दो बडी-बडी बूँदें उसके कपोलों पर ढुलक गई ।'[१]

इस घटना का मानवी पर बहुत बडा आघात होता है । लेखिका के शब्दों में, ' उस अँधेरी रात में खडी उस उज्ज्वलवर्णी युवती का चेहरा कितना करुण लग रहा था, कैसे लिखूं ? न ललाट पर बिन्दी थी, न हाथों में चूडियाँ, सफेद साडी से मेल खा रहा सफेद चेहरा । लगता था, अपने ही हाथों से अपना सुहाग उतार कोई सद्यःवैधव्यदग्ध पाषाण हृदया विधवा ही मेरे सम्मुख खडी है ।'[२]

' भीलनी ' कहानी में बडी बहन के प्रसव-काल में बहन की देखभाल करने विलासिनी सुहासिनी के घर जाती है, परंतु वहाँ स्वयं उसके जीजाजीसे उसके प्रेमसंबंध स्थापित हो जाते हैं । एक बार सुहासिनी अपने कमरे में सोई होती है उसकी आँखें लग जाती है, अचानक वह पाती है उसके निकट उसके जीजाजी सोए हुए है । वह कहती है, ' शायद मैं भय से चीख भीपडती , पर तब ही परिचित देह-परिमल ने मुझे बेसुध कर दिया । बलिष्ठ बांहों के घेरे में मैं न जाने कब तक वैसी ही बेसुध पडी रही । हम दोनों के धडकते हृदय एकसाथ संलग्न होकर, घडी के पेंडुलम की-सी सधी धडकन में धडक रहे थे और तब ही... तब ही...।'[३]

'वह कहने लगी, ' सहसा कमरे की बिजली लौट आई । पहले तो अन्धकार से अचानक प्रकाश के घेरे में लौटी अपनी आँखें पूरी मैं ठीक से खोल नहीं पाई, पर जब आँखें पूरी खुलीं तो देखा,दोनों पर्दों की भाजों के बीच दिद्दा (सुहासिनी) बुत बनी खडी है ।.... मैं उसे (जीजाजी को) पुकार भी नहीं सकी ... कि दिद्दा एक बार फिर पर्दों की यवनिका चीरकर खडी हो गई । उनका अस्वाभाविक रूप से खूंखार बन उठा चेहरा देख मैं सहम गई, फिर सहसा मेरी सहमी दृष्टि उनके हाथ के रिवाल्वर पर पडी । ... विद्रोही भीलों के जहर-बुझे तीरों से जिस सुहाग को बचाने डैडी ने उन्हें वह रिवाल्वर भेंट की थी उसीने उनका सोहाग छिन लिया ।

---

१ चांद (अपराधिनी) - शिवानी - पृ.सं.१२८ ।

२ - वही - पृ.सं.१२९ ।

३ भीलनी (गैंडा) - शिवानी - पृ.सं.६६ ।

निशाना ताका था कुल्टा, चरित्रहीना सौंत बन गई बहन की नंगी छाती की ओर और गोली लगी दूसरी नंगी छाती पर ।`[1]

`मौसी` कहानी की नायिका `तिला` उर्फ मिसेज वेदी को अपने पति की उच्छृंखलता से व्यथित होती हैं ।

`के` कहानी की डॉक्टर कमला अपने पति शेखर की सहेली किशोरी को बरदाश्त नहीं कर सकती यहाँ तक वह उसकी आइस्क्रिम में जहर डालकर हत्या कर देती हैं ।

`प्रतिशोध` कहानी की नायिका सौदामिनी अपने पति शंकर को एक कॉल गर्ल की आत्महत्या से संबंधित पाकर बहुत दु:खी होती हैं ।

इस तरह `अन्यसुरति दुखिता` नायिका भेद के अन्तर्गत `अभिनय` कहानी की जीवन्ती और `अपराजिता` की आरती सक्सेना का भी हम अन्तर्भाव कर सकते हैं ।

(२) मानवती

अन्यासक्त नायक पर कोप करने वाली नायिका इस श्रेणी के अंतर्गत आती हैं ।`[2]`

`प्रतिशोध` कहानी की नायिका सौदामिनी अपने पति शंकर को पन्द्रहवर्षा की कॉल गर्ल कोयल की आत्महत्या संबंधित पाती हैं तो उसे बहुत क्रोध आता हैं । वह अपने पति पर किस तरह क्रोध प्रकट करती हैं --

दोनों नित्य की भाँति एक साथ नि:शब्द खाना खाते हैं । एकसाथ अगल-बगल में लेटते हैं, फिर नित्य की भाँति बत्ती बुझा सौदामिनी अपना पलंग पति के पलंग से दूर खिसका लेती हैं । सहमें स्वर में शंकर पूछता हैं, `क्यों तबीयत ठीक नहीं हैं आज ?`

---

१ भीलनी (गैंडा) - शिवानी - पृ.सं. ६७ ।

२ शास्त्रीय समीक्षा के सिध्दान्त (१) - गोविन्दत्रिगुणायत - पृ.सं.२३७

उसके प्रश्न के साथ ही वह भूखी शेरनी - सी उसपर टूट पडती है , `बेहया बेशर्म, नाक झाड नहीं जाती यह पूछते । मेरी तबीयत अब क्या ठीक होगी ।`[1]

इस तरह `मानवती` नायिका भेद के अन्तर्गत `चांद` कहानी की मानवी के की डॉक्टर कमला और `अपराजिता` की आरती सक्सेना का भी हम अन्तर्भाव कर सकते हैं ।

(३) गर्विता

स्वरूप और नायक के प्रेम पर गर्व करनेवाली नायिका इस श्रेणी के अंतर्गत आ जाती हैं ।`[2]

`चांद` कहानी की चांद को अपने रूप और यौवन पर गर्व है । वह अपनी ही अकड में चलती है ।लेखिका और उनकी सहेली मानो उसे बुलाने की कोशिश करती हैं तो `पहले चांद ने देखा, और अपनी गर्वीली ग्रीवा ऐसे फेर ली जैसे कुछ सुना ही न हो ।` फिर वह पूछती है, `जी मुझे बुलाया ?`` वह बडी नम्रता से उठी तो उसका घेरदार नीला गरारा अन्तहीन नीलाकाश-सा ही दूर-दूर तक फैल गया ।`[3]

`पुष्पहार` की दुर्गी भी इस श्रेणी के अंतर्गत आ जाती है । उसका वर्णन देखिए --`दुर्गी के मोती-से उज्ज्वल दंतपंक्ति के दर्पण से कुंआरे मंत्री की अनभ्यस्त आँखें चौंधिया गईं.... मंत्री की दृष्टि अब गोरे ललाट पर बंधी,ओढनी के फेंटे से उतरकर कैशोर्य से उज्ज्वल दो आँखों से फिसलती तीखी नाक और फिर लाल रस-भरे अधरों से सरक,तनी वास्कट पर उभर सहसा सपाट होकर झूलती चांदी की जंजीर पर निबध्द हो गई....`उसने दुर्गी से पूछा --`किस गाँव की लडकी है तू ? रतनपुर की है क्या ?` ... तब क्यों कहकर पतली नाक को कपाल पर चढा --

१ प्रतिशोध (रथ्या) - शिवानी - पृ.सं.१०८ ।

२ शास्त्रीय समीक्षा के सिध्दान्त (१) - गोविन्द त्रिगुणायत - पृ.सं.२३७

३ चांद (अपराधिनी) - शिवानी - पृ.सं.१०० ।

लिया और पूछा ,` क्या रतनपुर में ही सब` बान` ( सुंदरियाँ ) बसती हैं ।` और फिर वह धृष्ट उत्तर के साथ मुक्त मोहिनी हंसी का जाल बिखेरती, एक बार भी पीछे मुडे बिना चली गई ।` [१]

` दण्ड` कहानी की सोलह वर्षीय किशोरी चांदमनी को अपने रूप सौन्दर्य काजो गर्व हुआ है, वह अन्य पात्रों से सूचित किया गया है । उसे देखकर ठेकेदार कहता है --` अरी चांदमनी, तू छोकरी अपने को समझती क्या है री ? अपने इस रूप का इतना घमंड क्यों है री तुझे ? अतिरूप से ही जनकसुता हरी गई थी, इतना याद रख छोकरी ।` [२]

पुष्पहार (मेरी प्रिय कहानियाँ) - शिवानी - पृ.सं.४२ ।

दण्ड (गेंडा) - शिवानी - पृ.सं.१०७ ।

वर्ग - ७

* काल के अनुसार
शिवानी की कहानियों की नायिकाओं का वर्गीकरण *

प्रस्तुत वर्ग में आठ प्रकार की नायिकाएँ आती हैं :---

(१) स्वाधीन पतिका	(२) खण्डिता
(३) अभिसारिका	(४) कलहान्तरिता
(५) विप्रलब्धा	(६) प्रोषित पतिका
(७) वासकसज्जा	(८) विरहोत्काण्ठिता ।

(१) स्वाधीन पतिका

यदि नायक पूर्णत: अपने अधीन हैं तो सर्वथा सुखी और सन्तुष्टमना नायिका `स्वाधीन पतिका` श्रेणी के अंतर्गत आ जाती हैं ।[१]

`मामाजी` कहानी की नायिका रोहिणी के अधीन उसका पति राजेन्द्र किस तरह हैं देखिए -` रोहिणी भुनभुनाकर पति से कहती, पर राजेन्द्र सुनी की अनसुनी कर देता । रोहिणी को कभी संतोष नहीं हुआ । एक जिले से दूसरे को तबादला नहीं होता तो वह पति को अकर्मण्य होने के ताने देती । तबादला होकर वह तरक्की पर जाता,तो वह उसके पिछले पद के लिए बिसूरती - ` इससे तो आपकी डिप्टी कलक्टरी अच्छी थी । कलक्टर न हुए, तहसीलदार हो गए । जब देखो तब एक न एक मिनिस्टर कंधे पर सवार हैं । सेक्रेटरियट में जरा-सी कोशिश से पहुँच जाइएगा ।रतनकी जीजी को देखिए न, जीजाजी डिप्टी सेक्रेटरी क्या हुए, रानी बन गई हैं ।` राजेन्द्र ने भी एक दिन उसे रानी बना दिया, पर उसका बडबडाना बन्द नहीं हुआ ।`[२]

---

१ रीतिकाव्य की भूमिका - डॉ.नगेंद्र - पृ.सं.१३९ ।

२ मामाजी (कैंजा) - शिवानी - पृ.सं.१२३ ।

इसी तरह, ` साधो ई मुर्दन कै गाँव ` की वह, ` बन्द घडी ` की माया और पिटी हुई गोटे ` की चन्दो का भी ` स्वाधीन पतिका ` नायिका भेद के अन्तर्गत हम अन्तर्भाव कर सकते हैं ।

(२) खण्डिता

अन्य स्त्री के संसर्ग-चिह्नों से युक्त नायक जिसके पास जाय वह ईर्ष्या से कलुषित चित्तवाली नायिका ` खण्डिता ` कहलाती हैं ।` [१]

` चांद ` कहानी की नायिका मानवी मैके से लौट आती हैं तो उसके पति जे. के.के तकिये से उसकी नौकरानी चांद के गिलट के घुंघरू जडे कई कांटे उसे मिल जाते हैं । पति हडबडा जाता हैं । मै नहीं जानता, मैं नहीं जानता कहने लगता हैं परंतु वह कहती हैं, ` मैं जान गई थी कि उन कांटों को वहाँ कौन छोड गई थी ? उसने क्या कांटे ही छोडे थे वह तो अपने सस्ते इत्र की खुशबू जे.के. के तकिये,चादर, हर कमीज,हर रुमाल की बखिया में गूँथ-गूँथकर छोड गई थी ।` [२]

इससे उसका संशय दृढ हो जाता हैं और चित्त पति के प्रति कलुषित हो जाता हैं । लेखिका के शब्दों में -- ` उस अंधेरी रात में.... उस उज्ज्वलवर्णी युवती का चेहरा कितना करुण लग रहा था । न ललाट पर बिन्दी थी, न हाथों में चूडियाँ,सफेद साडी से मेल खा रहा सफेद चेहरा ।` [३]

इसी तरह,मौसी कहानी की तिला और ` के ` की डॉक्टर कमला का ` खण्डिता ` नायिका भेद के अन्तर्गत हम अन्तर्भाव कर सकते हैं ।

---

१ रीति काव्य की भूमिका - डॉ. नगेंद्र - पृ.सं.१३९ ।

२ चांद (अपराधिनी) - शिवानी - पृ.सं.१२९ ।

३ चांद (अपराधिनी) - शिवानी - पृ.सं.१२९ ।

(३) अभिसारिका

जो नायक से मिलने के लिए संकेत स्थान पर जाय ऐसी कामातुरा नायिका को 'अभिसारिका' कहते हैं।'[१]

'तुलादान' की रोजी अपने प्रेमी से मिलने संकेत स्थान पर जाती हैं। दोनों के मिलने का संकेत स्थान कलमटिया की तीखी चट्टान हैं जहाँ से अल्मोडा शहर दिखाई देता हैं। अपने संकेत स्थान पर पहुँचने के लिए रोजी का प्रेमी अपनी पत्नी से यह कहकर आता हैं कि वह दौरे पर जा रहा हैं और रोजी अपनी आंटी को घिस्सा दे आती हैं कि वह बूढे पादरी से ग्रामर पढने जा रही हैं।

'दण्ड' कहानी की षोडशवर्षीय नायिका चांदमनी अपने प्रेमी डॉ. सिंह को मिलने रात आधी रात उसके घर आ जाती हैं। प्रस्तुत हैं उसका वर्णन, 'चांदमनी नित्य आधी रात को निर्भीक अभिसारिका बनी उसकी खिडकी के नीचे खडी हो जाती। दो लम्बे-लम्बे हाथों की रस्सी, उसे ऐसे ऊपर खींच लेती, जैसे वह कागज के फूल हो।'[२]

पुष्पहार कहानी की नायिका दुर्गा अपने पति की नजर चुराकर जंगली बिल्ली-सी खिडकी से सटे तिमिल वृक्ष की डालियाँ पकडकर कहाँ जाती हैं? अपने प्रेमी से मिलने संकेत स्थल पर। संकेत स्थल कहाँ हैं? 'कुमाऊं के बियावान ग्राम की तलहटी में झील के किनारे, जहाँ से एक वर्ष पहले नौ फुटा बाघ, नहा रहे पटवारी के जवान पुत्र को खींच ले गया था।[३]' वहाँ आधी-आधी रात को वह अपने प्रेमी से मिलने जाती हैं।

इसी तरह 'चलोगी चन्द्रिका' की चन्द्रिका और 'शायद' कहानी की कुसुम का भी हम 'अभिसारिका' नायिका-भेद के अन्तर्गत अन्तर्भाव कर सकते हैं।

---

१ रीति काव्य की भूमिका - डॉ. नगेंद्र - पृ.सं.१३९।

२ दण्ड (गैंडा) - शिवानी - पृ.सं.११२।

३ पुष्पहार - (मेरी प्रिय कहानियाँ) - शिवानी - पृ.सं.४८।

(४) कलहान्तरिता

`क्रोध के मारे पहले तो प्रार्थना करते हुए नायक को निरस्त कर दे फिर पीछे से पछताय उसे `कलहान्तरिता` कहते हैं।`[१]

`ज्येष्ठा` कहानी की पिंकी उर्फ हरिप्रिया प्रस्तुत नायिका भेद का एक उत्तम उदाहरण है। अपने जेठ राजेश द्वारा जब उसके सम्मुख विवाह का प्रस्ताव आता है तो वह उसे तमाचा मार देती है, इतनाही नहीं राजेश की मृत्युकामना वह करती है और जाखनदेवी को घृतदीप जलाती है वही हरिप्रिया जीवन के उत्तरार्ध में राजेश से विवाह करती हुई दिखाई देती है।

`बन्दघडी` की नायिका माया पति से झगडते झगडते जीवन से ऊबकर आत्महत्या करना चाहती है परंतु वही माया बाद में पछताती है और अपने पति में गुण ही गुण उसे नजर आने लगते हैं।

(५) विप्रलब्धा

`संकेत करके भी प्रिय जिसके पास न जाय उस नितान्त अपमानिता को `विप्रलब्धा` कहते हैं।`[२]

`जा रे एकाकी` की नायिका चनुली अपने फौजी पति के खातिर जेल में सजा भुगत रही है। पति सकुशल घर लौटता है। चिठ्ठियाँ भेजता है परंतु जेल में चनुली से मिलने नहीं आता, अतः वह अतीव दुःखी बन जाती है। जब चनुली का पति वादा करके भी दुबारा नहीं आता, तो वह कहती है --`मैं जानती हूँ दीदी, उन्होंने दूसरी शादी कर ली होगी, यही सोचती हूँ। दो साल तो कट गए हैं, दो साल और हैं। पर छूटकर कहाँ जाऊँगी मैं ? कभी मिलने तो यही पूछती। जब ले

---

१ रीति काव्य की भूमिका - डॉ.नगेंद्र - पृ.सं.१३९।

२ रीतिकाव्य की भूमिका - डॉ.नगेंद्र - पृ.सं.१३९।

ही नहीं जाना था तो मेरी सजा क्यों कम करवा दी ?` [१]

` विप्रलब्धा` कहानी की नायिका निम्मी उर्फ निर्मला विप्रलब्धा नायिका भेद का एक उत्तम उदाहरण हैं । साथ ही साथ कहानी का शीर्षक भी स्वयं नायिका के स्वरूप की ओर संकेत करता हैं । निम्मी की सगाई सुरेश से हो जाती हैं । सगाई में सुरेश एक नीलम की चौकार अंगूठी पहनाता हैं । अनेक वर्ष बीत जाने के बाद एक निकट के रिश्तेदार के विवाह के लिए निम्मी जाती हैं । रास्ते में ही उसे पता चलता हैं मामी की जिस बेटी के विवाह के लिए वह जा रही हैं उसका विवाह सुरेश के बेटे के साथ हो रहा हैं । निम्मी बीच राह से ही लौटती हैं और वह अंगूठी अपनी सहेली (लेखिका) को यह कहकर सौंपती हैं -` इसे सुरेश को दे देना, अपने बेटे की बहू को पहना देगा ।` [२] आंसू बहाते हुए वह लेखिका से कहती हैं --` आज तक जिसके लिए मूर्खतावश इसे पहनती रही वह मेरे अज्ञान से अन्धी कल्पना - दृष्टि में अभी भी मेरे लिए कुंआरा बैठा था । आज अचानक वही अपने बेटे की बारात सजाकर चल दिया तो अब किसके लिए पहनूं ?` [३]

(६) प्रोषित पतिका

अनेक कार्यों में फँसकर जिसका पति परदेश चला गया हैं वह काम-पीडिता नायिका` प्रोषित पतिका` कहलाती हैं ।` [४]

---

१ जा रे एकाकी - (अपराधिनी) - शिवानी - पृ.सं. ३६ ।

२ विप्रलब्धा (कृष्णवेणी) पृ.सं.१२१

३ विप्रलब्धा (कृष्णवेणी) - शिवानी - पृ.सं.१२१ ।

४ रीति काव्य की भूमिका - डॉ.नगेंद्र - पृ.सं.१३९ ।

`चांद` कहानी की नायिका मानवी उर्फ मानो अपने पति जे.के. के बारे में अपनी सहेली लेखिका से शिकायत करती है कि उसका पति जे.के. दिन डूबे दफ्तर से लौटता है, फिर क्या इष्ट-मित्रों के बीच उठने-बैठने का समय रह जाता है ? तब लेखिका उसे समझाती है --` मानो, सचिव-अनुसचिव की पत्नियों को तो सदा ही प्रोषितपतिका का जीवन जीना पडता है ।`[१]

(७) वासकसज्जा

प्रिय समागम का निश्चय होने से जो वस्त्रालंकारों से सुसज्जित हो रही हो, उसे `वासकसज्जा` कहते है ।

` छि: मम्मी, तुम गंदी हो` की नायिका जानकी अपने पति के दफ्तर चले जाने के बाद सोलह वर्षीय अपने प्रेमी पडोसी की प्रतीक्षा किस तरह करती है देखिए -

` रातभर शराबी पति,उसकी चमडी उधेड कर रख देता पर उसके दफ्तर जाते ही मुग्धा नायिका ,दूसरे हंसमुख चेहरे को देखते ही सब व्यथा बिसरकर रह जाती । अपने एकांत शयनकक्ष में ही उसने उसके पढने की व्यवस्था कर दी थी । वह पढने बैठता, तो वह गर्म-गर्म चाय बनाकर धर जाती ।`[२]

` भिक्षुणी` कहानी की नायिका किसी भी इस वर्ग में आ जाती है ।

(८) विरहोत्कण्ठिता

आने का निश्चय करके भी दैववश जिसका प्रिय न आ सके वह खिन्नमना नायिका` विरहोत्कण्ठिता ` कहाती है ।`[३]

---

१ चांद (अपराधिनी) - शिवानी - पृ.सं.१२३ ।

२ छि: मम्मी, तुम गंदी हो (अपराधिनी) - शिवानी - पृ.सं.५१ ।

३ रीति काव्य की भूमिका - डॉ.नगेंद्र - पृ.सं.१३९ ।

'चलोगी चन्द्रिका' कहानी की नायिका चन्द्रिका बुधवार के दिन ठीक पाँच बजे सेनेटोरियम के पीछे संकेत स्थल पर पहुँच जाती है। परंतु तीस वर्षों बाद उसका बदला हुआ रूप, घनी झाडी के भीतर छिपा चन्द्रवल्लभ देखता है और उसके सम्मुख आने का साहस ही नहीं करता। वह देखता है ---

'विराट शरीर, भग्न दन्त-पंक्ति, बूंदी के लड्डू की ही भाँति ठांस-ठांसकर बांधा गया सूक्ष्म जूडा, अधखिचडी बालों को विभक्त करती टेढी-मेढी अयत्न से संवारी गई मांग, पैरों में फटर-फटर करते क्रेपसोल के मर्दाने जूते और बुर्के सी भाँति लपेटा गया खुरदरा काला शॉल। आँखों पर लगे चश्मे को उसी खुरदरे शॉल से पोंछ, उसने एक बार फिर आँखों पर लगा, इधर-उधर बडे ध्यान से देखा। छह बजे। सात बजे। और जब दूर गिरजे की घडी ने टन-टन कर आठ भी बजा दिए, तब सूटकेस उठाकर खडी हो गई। अन्तिम बार शून्य दृष्टि से उस अरण्य को निहार, चन्द्रिका अपने मोटे मर्दाने जूते की घोडे की - सी टाप से सूखी पिरूल घास रौंदती, धीरे-धीरे उतार उतर गई।'[१]

इसी तरह 'जा रे एकाकी' की नायिका चनुली, और 'प्रतीक्षा' की माधवी भी इस वर्ग में आ जाती हैं।

उपसंहार -----

प्राचीन दृष्टिकोण से शिवानी की कहानियों में विभिन्न रूपों की चर्चा करने के बाद उपसंहार में मैं निम्नलिखित निष्कर्षों तक पहुँचा हूँ।

(१) कामशास्त्र, नाट्य-शास्त्र, काव्यशास्त्र की दृष्टि से नायिकाओं के जिन विभिन्न रूपों की प्राचीन साहित्य और साहित्यशास्त्र में बहु चर्चा हुई है उन विभिन्न नायिकाओं के रूप शिवानी की कहानियों में कम अधिक मात्रा में प्राप्त होते हैं।

---

१ चलोगी चन्द्रिका (गैंडा) - शिवानी - पृ.सं.९४-९५।

(२) कामशास्त्र की दृष्टि से शिवानी की कहानियों में पद्मिनी, चित्रणा, शंखिनी और हस्तिनी नायिकाओं के क्रमश: उदाहरण इस प्रकार हैं --

(१) पद्मिनी -` जा रे एकाकी` की चनुली, ` भिक्षुणी` की किकी, ` तर्पण` की पुष्पा पंत ।

(२) चित्रिणी -` चांद` की चांद ।

(३) शंखिनी -` अलख माई` की वैष्णवी उर्फ लक्ष्मी उर्फ लछमी ।

(४) हस्तिनी -` छि: मम्मी तुम गंदी हो` की जानकी, ` के` की डॉक्टर कमला ।

(३) शिवानी की निम्नलिखित कहानियों में कर्म के अनुसार नायिकाओं की झलक दिखायी देती है --

(क) स्वकीया --

क्र.	कहानी	नायिका
१	जा रे एकाकी	चनुली
२	साधो ई मुर्दन कै गाँव	वह
३	मीलनी	सुहासिनी
४	ज्यूडिथ से जयन्ती	रमा
५	अनाथ	ऐनी
६	मौसी	तिला
७	बन्द घडी	माया
८	प्रतीक्षा	माधवी
९	लाटी	बानो
१०	पिटी हुई गोट	चन्दो

क्र.	कहानी	नायिका
११	शपथ	शुभा
१२	लिव्ं	प्रिया दामले
१३	शर्त	रमा
१४	प्रतिशोध	सौदामिनी
१५	मित्र	राधा
१६	अपराजिता	आरती सक्सेना
१७	सौत	नीरा

(ख) परकीया

क्र.	कहानी	नायिका
१	छि: मम्मी तुम गंदी हो	जानकी
२	भीलनी	विलासिनी
३	मन का प्रहरी	प्रा.अनुराधा पटेल
४	भिक्षुणी	किकी
५	चन्नी	चन्नी
६	निर्वाण	मनोरमा चोपडा

(ग) सामान्या

१.`साधो ई मुर्दन कै गाँव` की मग्गी, २.`चांद` कहानी की चांद और ३.`तोप` कहानी की क्रिश्चियाना वेरानिका टॉमस ।

(४) `पति प्रेम` के अनुसार नायिकाओं को शिवानी की निम्नलिखित कहानियों में देखा जा सकता है ।

(च) ज्येष्ठा --

क्र.	कहानी	नायिका
१	जा रे एकाकी	चनुली
२	साधो ई मुर्दन कैं गाँव	मरगी
३	मन का प्रहरी	प्रा.अनुराधा पटेल
४	प्रतीक्षा	माधवी
५	मामाजी	रोहिणी
६	ज्येष्ठा	पिटी उर्फ हरिप्रिया
७	शपथ	शुभ्रा
८	शर्त	रमा
९	मित्र	राधा

(छ) कनिष्ठा

क्र.	कहानी	नायिका
१	अलख माई	लछमी उर्फ लक्ष्मी
२	चांद	मानवी
३	ज्यूडिथ से जयन्ती	रमा
४	मौंसी	तिला
५	प्रतीक्षा	माधवी
६	श्राप	दिव्या
७	प्रतिशोध	सौदामिनी
८	अभिनय	जीवन्ती

क्र.	कहानी	नायिका
९	अपराजिता	आरती सक्सेना
१०	सौत	नीरा

`प्रतीक्षा` कहानी की माधवी को कहानी के पूर्वार्ध्द में पति का सर्वोच्च प्रेम मिलता है परंतु उत्तरार्ध में पति द्वारा उसकी अवहेलना होती है । इसके परिणामस्वरूप कहानी की नायिका को दोनों वर्गों के अन्दर रखा गया है ।

(५) प्रकृति । गुण के आधार पर नायिकाओं के विभिन्न प्रकार निम्नलिखित कहानियों में देखे जा सकते हैं ।

(ट) उत्तमा

क्र.	कहानी	नायिका
१	जा रे एकाकी	चनुली
२	अलख माई	रजुला
३	करिए छिमा	हीरावती
४	ज्यूडिथ से जयन्ती	रमा
५	अनाथ	ऐनी
६	घण्टा	लक्ष्मी
७	तुलादान	रोजी
८	पिटी हुई गोट	चन्दो
९	शायद	कुसुम
१०	प्रतिशोध	सौदामिनी
११	अभिनय	जीवन्ती
१२	अपराजिता	आरती सक्सेना

(ड) मध्यमा

१.चलोगी चन्द्रिका की चन्द्रिका ,
२.ज्येष्ठा की पिरी उर्फ हरिप्रिया,
३.बन्द घडी की माया,
४.चांद की मानवी,
५.अलख माई की लछमी,
६.चन्नी की चन्नी,
७.साधो ई मुर्दन कै गाँव की मग्गी ।

(ड) अधमा

१. छि: मम्मी तुम गंदी हो की जानकी
२. चांद की चांद
३.भिक्षुणी की किकी
४.पुष्पहार की दुर्गी
५. के की डॉक्टर कमला
६. निर्वाण की मनोरमा चोपडा
७. मन का प्रहरी की प्रा.अनुराधा पटेल ।

(६) वय के अनुसार नायिका भेद के निम्नलिखित उदाहरण प्राप्त होते हैं ---

(त) मुग्धा --

१. लाटी की बानो
२. दण्ड की चांदमनी
३. पुष्पहार की दुर्गी
४. प्रतीक्षा की माधवी
५. तुलादान की रोजी
६. अनाथ की ऐनी
७. अभिनय की जीवन्ती ।

(थ) मध्या

१. जा रे एकाकी की चनुली
२. साधो ई मुर्दन कै गाँव की मरगी
३. मीलनी की विलासिनी
४. पिटी हुई गोट की चन्दो ।

(द) प्रौढा

१. मन का प्रहरी की प्रा.अनुराधा पटेल
२. के की के उर्फ डॉक्टर कमला
३. तोप की तोप उर्फ क्रिश्चियाना वैरोनिका टॉमस ।

(७) दशा के अनुसार नायिका भेद के उदाहरण --

(प) अन्य सुरति दुःखिता

१.चांद की मानवी
२. मीलनी की सुहासिनी
३. मौसी की तिला
४. के की डॉक्टर कमला
५. प्रतिशोध की सौदामिनी
६. अभिनय की जीवन्ती
७. अपराजिता की आरती सक्सेना ।

(फ) मानवती

१. प्रतिशोध की सौदामिनी
२. चांद की मानवी
३. के की डॉक्टर कमला
४. अपराजिता की आरती सक्सेना ।

(ब) गर्विता

१. चांद की चांद
२. पुष्पहार की दुर्गी
३. दण्ड की चांदमनी ।

(८) काल के अनुसार नायिकाओं के वर्गीकरण निम्नलिखित नायिका भेद के उदाहरण प्राप्त होते हैं ---

(य) स्वाधीन पतिका

१. मामाजी की रोहिणी
२. साधो ई मुर्दन कै गाँव की वह
३. बन्द घड़ी की माया
४. पिटी हुई गोट की चन्दो ।

(२) खण्डिता --

१. चांद की मानवी
२. मौसी की तिला
३. के की डॉक्टर कमला ।

(ल) अभिसारिका

१. तुलादान की रोजी
२. दण्ड की चांदमनी
३. पुष्पहार की दुर्गी
४. चलोगी चन्द्रिका की चन्द्रिका
५. शायद की कुसुम ।

(व) कलहान्तरिता

१. ज्येष्ठा की पिट्टी
२. बन्द घड़ी की माया ।

(श) <u>विप्रलब्धा</u>

१) जा रे एकाकी की चन्द्रली २) विप्रलब्धा की निम्मी ।

(ष) <u>प्रोषितपतिका</u>

१. चांद की मानवी ।

(स) <u>वासकसज्जा</u>

१.छि: मम्मी तुम गंदी हो की जानकी २.मिदाुणी की लिवी ।

(ह) <u>विरहोत्काण्ठिता</u>

१. चलोगी चन्द्रिला की चन्द्रिका
२. जा रे एकाकी की चन्द्रली
३. प्रतीक्षा की माधवी ।

इस तरह प्राचीन दृष्टिकोण से शिवानी की कहानियों में नायिकाओं के विभिन्न रुप दृष्टिगोचर होते है ।

(ब) आधुनिक दृष्टिकोण से

शिवानी की कहानियों में नायिकाओं के विभिन्न रुप

(१) अवासनात्मक दृष्टिकोण से

१) दादी,

२) माता,

३) पुत्री

४) भगिनी ।

(२) वासनात्मक दृष्टिकोण से

१) प्रेमिकाएँ अ) प्रेम का आदर्श प्रस्तुत करनेवाली नायिकाएँ ।
ब) असफल प्रेमिकाएँ ।

२) गृहस्थ नायिकाएँ -- अ) सफल गृहस्थ नायिकाएँ
ब) असफल गृहस्थ नायिकाएँ ।

(३) अन्य नायिकाएँ ---

१) विधवा नायिकाएँ,

२) पतिता, वेश्या, बलात्कारिता नायिकाएँ

३) शार्विलक, ठगिनी, डकैत नायिकाएँ

४) हत्यारिन । खूनी नायिकाएँ

५) महत्वाकांक्षिणी नायिकाएँ ।

वर्ग-१

" अवासनात्मक दृष्टिकोण से
शिवानी की कहानियों की नायिकाओं का वर्गीकरण "

अवासनात्मक दृष्टिकोण से शिवानी की कहानियों में चार प्रकार की नायिकाओं का चित्रण प्राप्त होता हैं ---

१. दादी
२. माता
३. पुत्री
४. भगिनी ।

(१) दादी --

आजकल `दादी` नामकी संस्था विभक्त-परिवारों से लुप्त होती जा रही हैं, परंतु इस संस्था की आज भी कितनी आवश्यकता हैं इसका संकेत शिवानी की `दादी` कहानी से मिलता हैं । `दादी` शीर्षक कहानी में दादी के अनुभवसंपन्न व्यक्तित्व के विविध पहलुओं पर प्रकाश डाला गया हैं । अपनी आधुनिका बहू को नौकर रखते समय दादी चेतावनी देती हैं --` इतनी सीख हमारी गांठ बांध लो बहू, नौकर हो या मेहरी,अगर काम में तेज हैं,तो मालकिन को चूना लगाने में भी तेज होंगे । नौकर तो मूर्ख ही रखना चाहिए बेटी ।` [१]

दादी उस नौकर के हालचाल पर निगरानी रखती हैं । वह अपनी बहू को सतर्क करती हैं --` क्यों री बहू, यह निगोडा रात को जाता कहाँ हैं । जब तू तनख्वाह पूरी देती हैं, तो कुछ कहा कर । गृहस्थ का घर हैं । न जाने कब कौन-सी जरूरत आ पडे ।` [२]

---

१ दादी (किशनुली) - शिवानी - पृ.सं.११८ ।

२ - वही - पृ.सं.११९ ।

पहले तो दादी किसी भी तरह उस नये नौकर के हाथ की चाय पीने को राजी नहीं होती है, पर बहू बार-बार उसके कान्यकुब्ज ब्राह्मण होने की पुष्टि देती है, तो दादी को मानना ही पडता है ।

अन्त में दादी की चेतावनी सही निकलती है । वह नौकर के वेष में उनके घर घुसा हुआ एक पाकिस्तानी जासूस निकलता है । आस-पडोस के लोग उसे और उसके साथी को घेर कर मारने के लिए उतारू हो जाते हैं, परंतु यही कठोर दादी फूल-सा कोमल हृदय भी रखती है । वह सरदारजी से कहती है -- ` ना बेटा ना इन्हें मारकर क्या तेरा बेटा लौट आएगा ?` [1]

इसीलिए तो दादी की पोती रंजना हमेशा दादी के आते ही लिपटकर अभयदान की याचना करने लगती है, ` प्रॉमिस दादी, तुम इस बार भागोगी नहीं ? [2] रंजना का इस तरह पूछने का यह कारण है कि जब भी दादी आती , मम्मी-डैडी बडी रात तक अंग्रेजी में लडते रहते और फिर स्कूल से लौटकर दोनों भाई-बहन देखते दादी कहीं भी नहीं है ।

(२) माता --

स्त्री के चरित्र के बारे में कहा जाता है कि स्त्री के चरित्र के बारे में ईश्वर भी अनभिज्ञ होता है तो सर्वसाधारण मनुष्य की क्या गत होगी ? तद्वत् स्त्री का मातृ रूप भी अलग अलग प्रकार की विशेषता लेकर किस तरह उपस्थित होता है इसका प्रत्यंतर शिवानी की कहानियों की नायिकाओं के मातृ रूपों को देखकर आता है ।

सात वर्ष की बेटी की नजरों में गिर गई माता के दर्शन ` छि: मम्मी तुम गंदी हो ` की नायिका जानकी में होते हैं । अपने प्रेमी की सहायता से अपने ही घर में अपने पति की हत्या करके जानकी रसोई में स्टोव पर चाय बनाने बैठती है तब अचानक उसकी सात वर्ष की बेटी जाग जाती है ।

---

१ दादी (किशनुली) - शिवानी - पृ.सं.१२१ ।

२ - वही - पृ.सं.११३ ।

....` छि: मम्मी, तुम गंदी हो ।`

किस भावना से प्रेरित हो कर उसने ऐसा कहा था ? क्या अचानक नींद से जगकर उसने रक्त-कुण्ड में पडे पिता को देख लिया था, इसलिए ? या ममी रसोई में स्टोव पर जिस अंकल के लिए चाय बना रही थी, उसने उसे देखकर दोनों हाथों में चेहरा छुपा लिया था, इसलिए उसका आक्रोश जननी पर उतरा था ? ` यह कौन है ममी ? ` उसने पूछा था ।

` तुम्हारे अंकल जी हैं बेटी ।`

` नहीं, ये मेरे अंकल जी नहीं हैं,तुम गंदी हो ममी ।` अबोध बालिका जैसे न्यायदंड सम्भाल कर स्वयं न्यायाधीश बन गई थी ।`[१]

दूसरी तरफ अकाली असमय वैधव्य प्राप्त रमा अपने पुत्र के लिए किस तरह समर्पण - भावना से जुट जाती हैं देखिए ...` दैवी प्रशासन रमा दी के लिए आरम्भ से अन्त तक जटिल ही बना रहा । भरी जवानी में उन्हें वैधव्य ने श्रीहीन ही नहीं किया, दीन-हीन भी बना दिया ।अबोध पुत्र को लेकर वह कहाँ जा सकती थीं ? न सास, न ससुर , न कोई आत्मीय, जो थे उन्होंने औपचारिक सान्त्वना के अतिरिक्त उन्हें किसी भी प्रकार के संरक्षण के लिए आशस्त नहीं किया । इसीसे वह कर्मठ नारी,एक बार फिर दैवी प्रशासन के सम्मुख,उसी समर्पण-भावना से झुक गई । इधर - उधर भाग-दौडकर,उन्हे एक स्कूल में नौकरी जुट गई । वही से प्राइवेट बी.ए., एम.ए.कर उन्होंने ट्रेनिंग भी कर ली ।`[२]

रमा दी का बेटा अशोक बडा होकर पढाई के लिए अमरिका जाता है । अपने बेटे पर उनका कितना विश्वास है देखिए,` घर आने पर जो कभी जनेऊ कान पर चढाने पर भी,मुझसे बिना पूछे, दिशा-जंगल नहीं गया,वह क्या कभी किसी सिंहनी का ग्रास बन सकता है ?`[३]

---

१ छि: मम्मी तुम गंदी हो (अपराधिनी) - शिवानी - पृ.सं.४५ ।

२ ज्यूडिथ से जयन्ती (कैंजा) - शिवानी - पृ.सं.७० ।

३ - वही - पृ.सं.७२ ।

वही अशोक विदेशी बहू साथ ले आता है ।बहू का ज्यूडिथ से जयन्ती नामकरण तो होता है परंतु वह विदेशी बहू रमा दी से उनका बेटा छीन लेती है और उन्हें समय समय पर अपमानित करती है ।

समय के साथ बदल न सकने के कारण एक माता अपने तीनों कन्याओं का भविष्य किसतरह उजाड देती है इसका उदाहरण हमें ' तीन कन्या ' कहानी में दिखाई देता है । बेबी और प्रतुल की सगाई होती है परंतु बेबी से बडी बहन का विवाह जब तक नहीं होता तब तक बेबी का विवाह असंभव होता है । मामी बेबी और प्रतुल को एकांत में मिलने नहीं देती ।

एक बार प्रतुल बेबी को अपने साथ घूमने ले जाना चाहता है । तब मामी कहती है -- ' नहीं, नहीं, सौ बार नहीं । क्या समझा है । रायबहादुर बनर्जी परिवार की कुंआरी लडकी रात आधी रात चौक-बाजारों में घूमती फिरेगी ।'[१]

प्रतीक्षा की सीमा समाप्त होने पर प्रतुल सगाई तोड देता है । एक दिन अकस्मात तीन कन्याओं और मामी के सम्मुख प्रतुल अपनी पत्नी के साथ आमने-सामने आ जाता है । वह कहता है -- ' मेरी इस पत्नी को विवाह से पूर्व, मेरे साथ रात, आधी रात घूमने में कभी कोई आपत्ति नहीं रही ।'[२]

' अनाथ ' में ऐनी अपनी बेटे को पिता का नाम नहीं दे सकती । तो ' मौसी ' कहानी में तिला अपने मौसेरी बहन की गोद में अपनी नवजात बेटी रखती है क्योंकि उसकी मौसेरी बहन की संतान जन्म लेते ही मरती है ।

' जोकर ' कहानी में माता का हृदय अपनी संतान के लिए कितना व्याकुल होता है - चाहे वह संतान कितनी ही कुरूप क्यों न हो - इसका चित्रण दिखाई देता है तिलोत्तमा देवी के उदाहरण से ।

---

१ तीन कन्या (किशनुली) - शिवानी - पृ.सं.८५ ।

२ - वही - पृ.सं.८८

`करिए छिमा` में तो हीरावती अपने प्रेमी की प्रतिष्ठा को सुरक्षित रखने के लिए प्रेम की बली वेदी पर स्वयं अपने नवजात शिशु को चढाती हुई दृष्टिगोचर होती हैं ।

इस तरह माता के विविध रूपों के दर्शन शिवानी की कहानियों की नायिकाओं में होते हैं ।

(३) पुत्री --

पुष्पा पन्त एक ऐसी पुत्री हैं जो पुत्र से बढकर साहस दिखाती हैं ।

भोलादत्त, तेरहवर्षा की पुष्पा पन्त पर बलात्कार करता हैं। उस आघात से पुष्पा के माता पिता चल बसते हैं । अनेक वर्षों के बाद वही भोलादत्त मंत्री बनकर आता हैं । उसके स्वागत समारोह में स्कूल मास्टरनी पुष्पा पन्त को स्वागत गीत गाना पडता हैं । उस समय भोलादत्त के निर्लज्ज व्यवहार की स्मृति से पुष्पा पन्त की स्थिति किस प्रकार हो जाती हैं और वह क्या कर बैठती हैं देखिए ,

` बिजली की तडप से पुष्पा पन्त खडी हो गई । क्रोध से उसका शरीर थर-थर कांप उठा । घर की बल्ली से लटकी देवतुल्य सन्त पिता की निर्जीव देह,छाती पकडकर बैठ गई माँ का करुण चेहरा.... सब एक-साथ स्मृतियों के तीखें भालों से उसे कोंच उठे । वह एक क्षण को सब कुछ भूल गई । कुछ ही घंटों पूर्व तक्ष गाडने लाया गया बडा-सा घन वहीं पडा था । लपककर उसने उठाया और दोनों हाथों से पकडकर दक्ष से भोलादत्त के सिर पर दे मारा ... भोलादत्त का सिर फट्ट से दो समान फांकों में फटकर रह गया ।`[१]

पुलिस उसे ले जाने लगती हैं, तब वह रुककर पीताम्बर जिससे उसका हाल ही में परिचय हुआ हैं,उससे कहती हैं --` पीताम्बर .. जानते हों मैंने हत्या क्यों की ? आज से वर्षों पूर्व इस दानव ने मेरा सर्वस्व हरण किया था । उसी लज्जा ने

---

१ तर्पण (माणिक) - शिवानी - पृ.सं.८०-८१ ।

मेरे पिता के प्राण लिए, माँ को दिल का दौरा पडा और वह भी चली गई । आज इतने वर्षों में मैंने पुत्री होकर भी माता-पिता का तर्पण किया पीताम्बर `१

(४) भगिनी

स्त्री का माता और भगिनी ममतामयी रूप होता है परंतु आधुनिक युग में रिश्तों के अर्थ भी बदलते हुए नजर आ रहे हैं । `मामाजी` कहानी की नायिका `रोहिणी` इसका ज्वलंत उदाहरण है ।

एक गरीब पुरोहित घर की बेटी रोहिणी उच्चपदस्थ अफसर राजेंद्र की पत्नी बन जाने के बाद अपने पागल और अकर्मण्य जुडवा भाई को अपनी झूठी शान और शौकत के कारण भाई मानने से इन्कार करती है । उसका धनान्ध विवेकशून्य चित उसे समझाने लगता है, `क्या वह पति के उच्चवर्गीय अतिथियों के सम्मुख अपने पगले नंगधडंग भाई को लाकर खडा कर सकती थी ? विभिन्न विभागों के सचिव, अनुसचिव उनकी `ओछी दम्भी पत्नियाँ, जिनमें से किसी का भाई ब्रिगेडियर था, किसी का मेजर और उन सब के बीच ... किस दु:साहस से वह छितरी दाढी पर लार टपकाते अपने पगले भाई का परिचय दे पाती ?` २

भाई को भाई न माननेवाली बहन का रूप तो हमने `मामाजी` कहानी में देख लिया । `भीलनी` कहानी में बहन को बहन न माननेवाली बहन का रूप भी दृष्टिगोचर होता है ।

`भीलनी` कहानी की नायिका विलासिनी, बहन का एक ऐसा रूप प्रस्तुत करती है जिस रूप की स्वयं उसे लज्जा महसूस होती है। अपनी बडी बहन सुहासिनी के सुहाग पर किया गया उसका अतिक्रमण स्वयं उसे अपनी नजरों से गिरा देता है । सुहासिनी की प्रथम प्रसूति के समय उसकी देखभाल करने के लिए माँ विलासिनी को

---

१ तर्पण (माणिक) - शिवानी - पृ.सं.४३ ।

२ मामाजी (कैंजा) -शिवानी - पृ.सं.१३३ ।

भेजती है परंतु वहाँ स्वयं अपने जीजाजी के प्रेम में फँस जाती है। एक दिन अकस्मात सुहासिनी को जब इस बात का पता चल जाता है तो वह भरी रिवाल्वर निकालती है और सौत बनी अपनी बहन को निशाना बनाना चाहती है परंतु दुर्भाग्यवश गोली उसके पति को लग जाती है । अंत में सुहासिनी स्वयं अपने आप को गोली मार देती है ।

अपनी वजह से बहन की गृहस्थी बरबाद हुई, इस बात का विलासिनी को बहुत दु:ख होता है उसका पछतावा इन शब्दों में व्यक्त होता है 'दिद्दा मुझे माफ कर गई, पर उस बडी अदालत ने मुझे माफ नहीं किया । दिया है आजन्म कारावास आत्मीय स्वजनों के चेहरे देखने को भी तरसने का कठोर दण्ड । इसी से शायद वह उदार न्यायाधीश मुझे काबूल भेज रहा है, जैसे पहले कभी हत्या के अपराधी को कालापानी भेज दिया जाता था ।'[१]

'मामाजी' और 'भीलनी' कहानी में सगे भाई और बहन को न माननेवाली बहन के रूप तो हम देख चुके, इसके विपरीत 'मेरा भाई' और 'कालू' कहानी में बहन का फिर वही ममतामयी रूप दृष्टिगोचर होता है । आज के आधुनिक युग में नारी के वही जन्मजात ममतामयी रूप को देखकर हम धन्य हो जाते है ।

---

१ भीलनी (गैंडा) - शिवानी - पृ.सं.७२ ।

वर्ग-२

वासनात्मक वर्ग के अनुसार
शिवानी की कहानियों की नायिकाओं का स्वरूप एवं वर्गीकरण

प्रस्तुत वर्ग के शीर्षक से ही स्पष्ट हो जाता है कि इस वर्ग की नायिका का नायक से वासनात्मक संबंध होता है। इस वर्ग के अन्तर्गत आनेवाली नायिकाएँ दो प्रकार की होती हैं --

(अ) प्रेमिकाएँ ,
(ब) गृहस्थ नायिकाएँ ।

(अ) प्रेमिकाएँ --

इस भेद के अंतर्गत प्रेम में सफल तथा असफल दोनों प्रकार की नायिकाएँ आ जाती हैं।

(ब) गृहस्थ -

गृहस्थ नायिकाएँ भी दो प्रकार की हो सकती हैं। एक तो ऐसी गृहस्थ नायिकाएँ जो अपने गृहस्थ जीवन का सफल निर्वाह करती हैं, दूसरे ऐसी गृहस्थ नायिकाएँ जो गृहस्थ में व्यस्त होने पर भी पर-पुरुष से सम्बन्ध स्थापित कर लेती हैं अथवा जिनके अपने पति के साथ सुखद सम्बन्ध नहीं होता ऐसी गृहस्थ नायिकाएँ असफल कही जाती हैं।

(अ) प्रेमिकाएँ --

नायिकाओं का सर्वाधिक महत्वपूर्ण वर्ग प्रेमिकाओं का वर्ग है। `प्रेम` मानवीय - वृत्तियों में सर्वाधिक सशक्त मनोवृत्ति है और प्रेम की अन्तिम परिणति किसी न किसी प्रकार के सूत्र अथवा बन्धन में होती है। इस बन्धन को समाजशास्त्रीय परिभाषा में विवाह कहा जा सकता है।

परंतु अधिकतर रूप से यह देखा जाता हैं कि किन्हीं परिस्थितियों के कारण नायक - नायिका का प्रेम-सम्बन्ध सफल नहीं हो पाता और प्रेम का पावन सूत्र जीवन की सचाई से टकराकर खण्डित हो जाता हैं । फिर भी प्रेम होता रहा हैं क्योंकि प्रेम मानव-जीवन का एक अनिवार्य तत्व हैं । प्रेम के बिना जीवन की कोई भी परिभाषा अधूरी रहेगी ।

प्रेमिकाओं के दो भेदों की चर्चा यद्यपि ऊपर की जा चुकी हैं , शिवानी की कहानियों की नायिकाओं का वर्गीकरण करते समय सफल प्रेमिकाओं के उदाहरण न के बराबर होने के कारण --

(१) प्रेम का आदर्श प्रस्तुत करनेवाली नायिकाएँ तथा

(२) असफल प्रेमिकाएँ इन विभागों में उनका वर्गीकरण करेंगे ।

(१) प्रेम का आदर्श प्रस्तुत करनेवाली नायिकाएँ --

प्रेम तो वही सार्थक हैं, जिससे मानव की सहज संवेदनाओं को गौरव मिले, व्यक्तित्व विकसित हो और अन्तस् का छिपा हुआ देवत्व पुष्ट होकर सबल हो सके ।

प्रेम त्याग पर आधारित होना चाहिए । त्याग पर आधारित प्रेम ही महान होता हैं । शिवानी की अधिकतर कहानियाँ पहाडी परिवेश की हैं जिनकी नायिकाएँ त्याग के उच्चतम उदाहरण प्रस्तुत करती हैं ।

यहाँ, मैं शिवानी की कहानी `जा रे एकाकी` की नायिका चनुली और करियें छिमा` की नायिका ` रजुला` का विस्तृत सन्दर्भ देना उचित समझता हूँ ।

सर्वप्रथम मैं यह स्पष्ट करना चाहता हूँ कि पति भी प्रेमी हो सकता है, जो कि` जा रे एकाकी` कहानी में चनुली के बारे में चरितार्थ हुआ हैं । ...
` चनुली` - उत्तराखंड के सीमावर्ती आसपास बसे दो ग्रामों में ही उसका मायका और

ससुराल है । विवाह उसका होता है स्वयं पति की इच्छा से । अपने सीढी-से बने खेत पर खडे वह बांके कुमाऊनी जवान सुन्दर चनुली को ककरियां बराते देखता है ... निर्णय लेने में फिर वह विलम्ब नहीं करता है । चनुली का उस फौजी से विवाह तो हो जाता है परंतु विवाह के बाद कुछ ही दिनों में लडाई के दौरान उसका पति देश की सेवा करने जाता है वह लौटकर नहीं आता । सब लोग समझाते हैं कि वह मर गया है, परंतु चनुली का असीम विश्वास है कि उसका पति जीवित है और वह लौटकर जरूर आएगा । अत: वह अपने सौभाग्यचिह्न नहीं उतारती ।

एक बार एक परिवेशिनी, सौभाग्यचिह्न को लेकर उसका अपमान करती है जिसे वह बरदाश्त नहीं करती और जाने अनजाने में (दरांती फेंकने से) उसके हाथों उस परिवेशिनी की हत्या होती है । उसे जेल में सजा भुगतनी पडती है ।

इसी दरम्यान उसका पति लौटकर आता है । सुप्रीम कोर्ट में उसकी सजा कम करवा लेता है । जेल में चनुली अपने पति से मिलने के दिवास्वप्न देखा करती है । वह लेखिका से कहती है कि उसके गांव जाकर उसके पति से मिले । अपने पति का वर्णन कर वह पुन: प्रत्यय का आनन्द लेती है । वह कहती है -- 'बाबू मेरे एकदम गऊ हैं, शांत किसीसे कुछ नहीं कहते ।' [1]

किन्तु इधर दो सालों से उसके पति की एक भी चिट्ठी नहीं आती । पहले तो वह समझाती है कि उसकी सास पति को वहाँ नहीं आने देती । बाद में उसे विश्वास हो जाता है कि उसके पति ने दूसरा विवाह किया होगा । फिर भी वह पन्द्रह अगस्त के अवसर पर जेल के सांस्कृतिक कार्यक्रम में गीत गाती है --

'पलटनों को बाजो बाजन लागो,
झोला तमलोटा साजन लागो
ओ मेरी इजा पर्के दे खीरा
लडना सूं जांछ - कुमयूंयां बीरा'

---

1 जा रे एकाकी (अपराधिनी) - शिवानी - पृ.सं. ३८ ।

पल्टनिया बाजा बजने लगा है, फौजी झोले-तमलोटों से सजा वीर रणबांकुरा युध्द में जा रहा है - अरी मेरी मां, तू जल्दी खीर तो पका दे, तेरा कुम्पयां वीर लड़ने जा रहा है ।"[1]

इस तरह लेखिका ने चनुली पहाड़न के माध्यम से पहाड़ के विशुध्द एवं आदर्श प्रेम का उदाहरण प्रस्तुत किया है ।

शिवानी की और एक संस्मरणात्मक कहानी 'अलखमाई' की नायिका 'रजुला' अर्थात् 'करियँछिमा' की 'हीरावती' त्याग का और एक ज्वलंत उदाहरण बनकर हमारे सम्मुख आ जाती है ।

रजुला अपने नवजात शिशु की जन्मते ही हत्या कर देती है । वह कहती है, 'क्योंकि उसकी शकल अपने बापसे मिलती थी, पैदा होते ही जिसकी शकल मैंने पहचान ली, बड़ा होता तो लोग उसे नहीं पहचान लेते -- सब जान जाते कि वह किसका बेटा है ।'

इस तरह वह अपने प्रतिष्ठित प्रेमी की प्रतिष्ठा पर आँच नहीं आने देती ।

(ब) असफल प्रेमिकाएँ

प्रेम के असफल होने के कई कारण हो सकते हैं । उनमें से प्रमुख कारण नायक - नायिकाओं का स्वरूप और परस्पर-संबंध है । दूसरा कारण हम यह भी बता सकते हैं कि प्रेम त्याग पर आधारित होने के बजाय स्वार्थ पर जब आधारित होता है तब प्रेम असफल होता है । साथ ही साथ भावना के स्थान पर वासना की अधिकता तथा कई प्रकार के सामाजिक बन्धनों के कारण भी प्रेम असफल हो जाता है ।

ऐसी ही असफल प्रेमिकाओं के उदाहरण अब हम प्रस्तुत करेंगे, जो शिवानी की कहानियों में हमें प्राप्त हुए हैं ।

---

१ जा रे एकाकी (अपराधिनी) - शिवानी - पृ.सं.४० ।

`तुलादान --`

कहानी की सोलहवर्षीय नायिका ` रोजी ` एक असफल प्रेमिका के रूप में उभरकर हमारे सम्मुख आ जाती है ।रोजी का एक गम्भीर,प्रौढ,आई.सी.एस.अफसर से प्रेम होता है। उसका प्रेमी विवाहित भी है । दोनों का चोरी चुपके मिलना जुलना बढता जाता है । उसके इस प्रेम-प्रकरण की चर्चा अल्मोडा के कोने-कोने में पहुँच जाती है । हमेशा की तरह रोजी और उसका प्रेमी मिडनाइट पिकनिक पर ` कलमटिया ` निकल जाते हैं । साहब के शक्की पत्नी को जाने कौन कह देता है वह भी वहाँ पहुँच जाती है ।

चट्टान पर खडे दो प्रेमियों मे से अपने पति को वह अपनी तरफ खींच लेती है और रोजी को नीचे धकेल देती है । रोजी अपनी दो टाँगे गँवा बैठती है और हमेशा हमेशा के लिए अपाहिज बनती है । उसका प्रेमी दुबारा लौटकर उसकी कभी पूछताछ भी नहीं करता । इस तरह अपने स्वार्थी प्रेमी के लिए अपना सर्वस्व न्योछावर करनेवाली नायिका रोजी एक असफल प्रेमिका साबित होती है ।

छि: मम्मी तुम गंदी हो --

की नायिका जानकी न तो सफल गृहस्थ नायिका बन पाती है और न ही सफल प्रेमिका । तीन बच्चों की माँ जानकी,सोलह वर्षीय पडोसी लडके से प्रेम करती है । प्रेम में पति काँटा बनता है इसलिए वह अपने प्रेमी की मदद से पति की हत्या कर देती है । उसकी गृहस्थी भी उजड जाती है और प्रेम की दुनिया भी विराण हो जाती है । वासना पर आधारित प्रेम समाज में हमेशा असफल ही होता है यह इस कहानी से स्पष्ट होता है ।

भिक्षुणी --

की नायिका ` किकी ` विवाह के बाद भी अपने प्रेमी को नहीं भूलती । अपनी ननद के साथ झगडा हो जाने के बाद अपमानित होने के कारण अपनी समृध्द गृहस्थी पर लात मारकर पूर्वाश्रम के प्रेमी रिपुदमन के साथ भाग जाने में वह सफल तो हो जाती

परंतु रिपुदमन की स्वार्थी वृत्ति के कारण फिर एक बार असफल हो जाती है ।

`मौसी`

कहानी की नायिका `तिला` भी असफल प्रेमिका कहलायी जानी चाहिए । प्रेम का रूपान्तर विवाह में हो जाने के बाद भी तिला परम सुखी हो जाने के स्थान पर परमदुःखी बन जाती है । पति बने उसके प्रेमी ब्रिगेडियर वेदी की असलियत का जब उसे पता चलता है तो उसे अपने विवाह के लिए पछतावा होता है ।

`शायद`

कहानी की नायिका `कुसुम` विवाह के पूर्व अपने प्रेमी `तारी` को जो टी.बी. से ग्रस्त मृत्यु शैय्या पर पडाहोता है, उसे अपना सर्वस्व समर्पित करती है, परंतु तारी इतनी बडी कुर्बानी को भूल जाता है । तन्दुरुस्त होने के बाद वह विवाह करके अपनी प्रेमिका को भूल जाता है ।

`दण्ड`

कहानी की नायिका चांदमनी, जमींदार साहब के संथाल भृत्य घाघू मांझी की बेटी है । डॉक्टर सिंह, जमींदार के अतिथि बनकर आते हैं । चौबीस वर्षों के तरुण डॉक्टर, सोलह वर्षों की चांदमनी के प्रेम में अपने आप को भूल जाते हैं ... `कभी-कभी प्रणय केलि में डूबी याचिका को चूल्हे पर जलती मछली का ध्यान नहीं रहता । जलांध पाकर वह मछली उतारने भागती तो युवा प्रेमी उसे फिर बाँहों में खींच लेता ।`[1]

एक बार तरुण डॉक्टर के संस्कारी चित के अधमरे विवेक ने विरोध में गर्दन उठाकर घोर आपत्ति भी की थी - यह तुम्हारा सरासर अन्याय है, क्यों परिणाम से आँखें मूँद रहे हो ? इस निर्दोषा अनुभवहीन किशोरी के साथ की छलना क्या तुम्हें जीवन भर नहीं डसेगी ?` पर उद्दाम मुंहफट चौबीस वर्षों का यौवन, सोलह

दण्ड (गैंडा) - शिवानी - पृ.सं.१११ ।

वर्षा का कैशोर्य, तालतमाल अरण्य से घिरा अतिथिगृह और डूबती संध्या सब मिल-जुलकर विवेक को मुंह,हाथ-पैर बांध दूर कोने में पटक देते । क्रूर नियति दोनों को शतमुखी विनिपात की खाई में खींच ले गई ।'[१]

हमेशा की तरह एक दिन डॉ. सिंह ने खिडकी से झाँककर देखा कि महुआ वृक्ष के नीचे बैठी ठण्डी कर रही चांदमनी है । डॉ. सिंह रात भर सो नहीं पाते । दूसरे दिन उठते ही वे अपना सामान बाँध लेते है और चांदमनी को बिना बताए चुपचाप चले जाते हैं । इसतरह चांदमनी के प्रेम की प्रवंचना होती दिखाई देती है ।

'मोल्नी'

कहानी की नायिका विलासिनी का अपनी बहन सुहासिनी के पति से प्रेम हो जाता है । समाज की दृष्टि से यह व्यभिचार बन जाता है ।स्वयं सुहासिनी अपनी बहन को गोली मारना चाहती है परंतु उसमें उसके पति की मृत्यु हो जाती है और बाद मे वह स्वयं अपने आप को गोली मारकर आत्महत्या कर लेती है । इस तरह विलासिनी किसी को मुँह दिखाने योग्य नहीं रह जाती ।

मन का प्रहरी --

की पैंतालीस वर्षीय प्रौढ नायिका' प्रा.अनु पटेल' अपने इक्कीस वर्षीय छात्र 'प्रियतम महंती' से प्रेम-विवाह करके भी सुखी नहीं होती । एक वर्ष के भीतर वह उसका साथ छोड देती है और अपने पुराने प्रेमी और भीतर के साथ भाग जाती है । उसके इस 'असफल प्रेमिका' के स्वरूप के लिए वह स्वयं उत्तरदायी है । वह एक चिट्ठी प्रियतम के लिए छोड जाती है --' हम दोनों ने बहुत बडी भूल की थी, प्रियतम । संसार की कोई भी शक्ति हम दोनों के बीच वयस की दूरी को पार नहीं सकती । तुम्हारे लडकपन को मेरे प्रौढ अनुभव का धैर्य कभी जीत नहीं पाया ।'[२]

इस तरह शिवानी की कहानियों में असफल प्रेमिका नायिकाओं के विभिन्न रूप प्राप्त होते हैं ।

---

१ दण्ड (गैंडा) शिवानी - पृ.सं.१११ ।

२ मन का प्रहरी (गैंडा) - शिवानी - पृ.सं.१३२ ।

(ब) गृहस्थ नायिकाएँ

वस्तुत: पत्नीरूप नायिका के ही ये दो रूप हैं --

(१) सफल गृहस्थ नायिका और

(२) असफल गृहस्थ नायिका ।

१) सफल गृहस्थ नायिकाएँ --

सफल गृहस्थी में स्त्री और पुरुष दोनों का समान योगदान आवश्यक होता है परंतु पुरुषप्रधान समाज-व्यवस्था में स्त्री पर अधिकतर अन्याय होने की संभावना होती है । स्त्री यदि सहनशील होती है तो अपनी गृहस्थी में सफल बन सकती है ।

शिवानी की कहानियों में `बन्द घडी` की नायिका माया, `शर्त` की रमा, `मित्र` की राधा और `अपराजिता` की आरती सक्सेना का सफल गृहस्थ नायिकाओं में हम अन्तर्भाव कर सकते हैं ।

`बन्द घडी` की नायिका माया अपनी गृहस्थी में इसलिए सफल हो जाती है कि वह अपने दु:खों से समझौता कर पाती है । आए दिन के झगडे से तंग आकर वह आत्महत्या करने की सोचती है परंतु आत्महत्या का वह क्षण टल जाने के बाद उसे चारों तरफ रोशनी नजर आती है ।

`शर्त` कहानी की रमा और `मित्र` कहानी राधा को संयोगवश अच्छा जीवनसाथी मिलजाने के कारण अपनी अपनी गृहस्थी में सफल सिद्ध होती है ।

परन्तु `अपराजिता` कहानी की नायिका आरती सक्सेना को अपनी गृहस्थी में सफल बनने के लिए काफी झगडना पडता है । जैसा कि कहानी का शीर्षक ही अपराजिता है, कहानी की नायिका आरती सक्सेना इस संघर्ष में अपराजेय साबित होती है । अपने पति को एक ढोंगी महाराज और उसकी शिष्या के चंगुल से सुरक्षित प्राप्त कराने में वह जो साहस दिखाती है वह निश्चित ही सराहनीय है ।

इस तरह सफल गृहस्थ नायिकाओंके जो उदाहरण शिवानी की कहानियों

मे प्राप्त होते हैं उनमें अपने गृहस्थ जीवन के प्रति निष्ठा, सहनशीलता, सहिष्णु वृति, समर्पण की भावना आदि गुणों के दर्शन हमें होते हैं ।

(२) असफल गृहस्थ नायिकाएँ --

गृहस्थी में पति-पत्नी दोनों का बराबर का हिस्सा होता हैं । इसमें जब संतुलन बिगड जाता हैं, तब गृहस्थी असफल बन जाती हैं । अपनी गृहस्थी में पत्नी कभी कभी स्वयं अपने कारण या पति के कारण अथवा संयुक्त परिवार में अन्य सदस्यों के कारण असफल बन जाती हैं ।

शिवानी की कहानियों में असफल गृहस्थ नायिकाओं के उदाहरण प्रचुर मात्रा में प्राप्त होते हैं ।

` अलख माई ` की नायिका लछमी उर्फ लक्ष्मी अपने पति और सास के अत्याचार को बरदाश्त नहीं कर पाती हैं, जिससे उसके हाथों पति और सास की हत्या हो जाती हैं ।

` छि: मम्मी तुम गंदी हो ` की नायिका जानकी अनमेल विवाह से खुश नहीं हैं साथ ही साथ अपने शक्की पति की स्वार्थी वृति से वह ऊब जाती हैं । परिणामस्वरुप पडोस के एक सोलहवर्षीय लडके उसका प्रेमसंबंध स्थापित हो जाता हैं । अपने प्रेमी की सहायता से वह अपने पति की हत्या कर डालती हैं ।

` चांद ` कहानी की नायिका मानवी उर्फ मानो और उसका पति जे.के. दोनों में नहीं बनती । दोनों में हमेशा झगडा होता रहता हैं । अंत में, स्त्रियों से नफरत करनेवाला मानो का पति घर की नौकरानी चांद के जाल मे फँस जाता हैं । मानवी को इस बात का जब पता चलता हैं तब तक उसकी गृहस्थी विराग हो जाती हैं ।

` ज्यूडिथ से जयन्ती ` की नायिका रमा दो भी एक असफल गृहस्थ नायिका हैं । मैके मे पिता की गृहस्थी का बोझा सँभालते सँभलते वह असमय प्रौढ बन जाती हैं । तिस पर दुहेजू पति से विवाह हो जाता हैं । पति भी ऐसा मिलता हैं जो पहली

पत्नी की स्मृति से बाहर नहीं आता । एक पुत्र का दान रमा दी की झोली में डालकर वह संसार से विदा लेता है । फिर भी वह प्रतिकूल परिस्थिति में पुत्र को इंजीनियर बनाती है और उच्च शिक्षा के लिए विदेश भेजती है । उसका पुत्र अशोक बडा इंजीनियर बनता है परंतु स्वदेश लौटते समय विदेशी बहू साथ ले आता है । रमा दी अपनी इस विदेशी बहू द्वारा हर पल अपमानित होती है । इस तरह पति और पुत्र द्वारा दुःख ही दुःख झेलना ही रमा दी के भाग्य में लिखा हुआ होता है । स्वयं लेखिका इसके बारे में एक जगह लिखती है -- ' मुझे हमेशा यही लगता कि रमा दी के साथ विधाता ने जन्म से मृत्यु तक केवल अन्याय ही किया है । '[१]

' भिक्षुणी ' की नायिका ' किकी ' पारिवारिक समस्या का शिकार बनकर असफल गृहस्थ नायिका सिद्ध होती है । हँसमुख और सरल स्वभाव का, ऊँचा ओहदा प्राप्त अपना पति, सुव्यवस्थित गृहस्थी, सुरुचि से संवरा सुंदर बंगला, चपरासी, मोटर और मखमली लॉन में खेलते उसके स्वस्थ बेटे बेटी की जोडी , सब को त्याग कर किकी अपने पहले प्रेमी रिपुदमन के आश्रय में चली जाती है ।

इसका एकमात्र कारण उसकी सबसे छोटी ननद जो एक अविवाहित डॉक्टरीन थी । किकी से हमेशा वह जलती थी और उसे वह जली-कटी सुनाती थी । उसकी सास भी ननद के ही पक्ष में होती है । उसकी सास उसके पति से कहती है, ' निखट्टू बना इसी के आंचल में बंधे रहो बेटा । देखना एक दिन तुझे यही आंचल ले घसीटेगा । '[२]

इस तरह किकी के सास के शब्द खरे निकलते हैं । किकी अपने हठी स्वभाव के कारण अपनी गृहस्थी में असफल हो जाती है । उसके बारे में लेखिका का यह कथन ठीक ही लगता है, ' किकी को मैं जानती थी । जिद्द चढने पर, वह स्वयं अपने पैरों में कुल्हाडी मारने में क्या कभी हिचकिचा सकती थी ? मुझे तो आज भी लगता है कि यदि उसकी वह कुंठाग्रस्त रुखी ननद उसके साथ रहने न आती तो बीसियों

ज्यूडिथ से जयन्ती (कथा) - शिवानी - पृ.सं.६९ ।

भिक्षुणी (कथा) - शिवानी - पृ.सं.११८ ।

रिपुदमन भी उसका अनिष्ट नहीं कर सकते थे ।`[१]`

`मौसी` कहानी की नायिका `तिला` चाचा चाची के लाख समझाने पर भी प्रेमविवाह कर बैठती है । ब्रिगेडियर वेदी से विवाह करने के बाद वह पछताती है । वेदी के घर आधुनिकता के नाम पर जो उच्छृंखल और स्वैर वातावरण होता है, उससे वह ऊब जाती है । ब्रिगेडियर वेदी की उच्छृंखल प्रवृत्ति से उसके मन में घृणा निर्माण हो जाती है । उसे अपनी इस असफलता का एहसास बुरी तरह कायल कर देता है ।

प्रदीर्घ बीमारी के कारण भी कुछ नायिकाओं का गृहस्थ जीवन असफल बना हुआ दिखाई देता है । `प्रतीक्षा` और `लाटी` ऐसी ही दो कहानियाँ हैं, जिनकी नायिकाओं में से पहली तो मनोरुग्ण है और दूसरी टी.बी. पेशण्ट । `लाटी` कहानी की नायिका `बानो` के प्रति उसका पति कर्नल जोशी कम से कम ईमानदारी से तो पेश तो आता है परंतु `प्रतीक्षा` कहानी की नायिका `माधवी` को जब पागलपन के दौरे पडने लगते हैं तब उसका पति विमल जोशी बीच राह में ही अनन्तकाल के लिए उसे प्रतीक्षा करने के लिए उसका साथ छोडकर चला जाता है ।

`अनाथ` कहानी की नायिका `ऐनी` आंतरजातीय और आंतरप्रांतीय विवाह के कारण अपनी गृहस्थी में असफल बन जाती है । उसका प्रेमी बनर्जी उससे विवाह तो कर लेता है, परंतु ऐनी का वैवाहिक जीवन ज्यादा दिन नहीं टिक पाता क्योंकि बनर्जी के पिता को, विघ्नसंतोषी लीलाधर पण्डित द्वारा इस विवाह की सूचना मिल जाती है और वह परशुराम सा क्रोधी बूढा बनर्जी को चील की भाँति बंगाल भगा ले जाता है । इस तरह ऐनी की गृहस्थी टूट जाती है ।

`पिटी हुई गोट` कहानी की नायिका चंदो अनमेल विवाह और पति के जुआरी होने के कारण उसे भी असफल गृहस्थ नायिका की श्रेणी में रखा जा सकता है ।

इस तरह, विविध कारणों से अपनी गृहस्थी में असफल हुई नायिकाओं के उदाहरण हमें शिवानी की कहानियों में प्राप्त होते हैं ।

---

१ भिक्षुणी (कैंजा) - शिवानी - पृ.सं.११८ ।

वर्ग-३

अन्य नायिकाएँ

शिवानी की कहानियों की नायिकाओं का अवसादात्मक और वासनात्मक वर्ग का वर्गीकरण देखने के पश्चात हम वर्ग-३ की अर्थात् अन्य नायिकाओं के वर्ग में आनेवाली कहानी - नायिकाओं की चर्चा करेंगे ।

अन्य नायिकाओं के अन्तर्गत शिवानी की कहानियों में निम्नलिखित चार प्रकार की नायिकाएँ प्राप्त होती हैं --

१. विधवा नायिकाएँ
२. पतिता, वेश्या, बलात्कारिता नायिकाएँ
३. शर्विलक, ठगिनी, डकैत नायिकाएँ
४. हत्यारिन । खूनी नायिकाएँ
५. महत्वाकांक्षिणी नायिकाएँ ।

इनमें से सर्वप्रथम हम शिवानी की कहानियों की विधवा नायिकाओं की हम चर्चा करेंगे ।

(१) विधवा नायिकाएँ --

` ज्यूडिथ से जयन्ती ` की नायिका रमा दी का विवाह एक दुहेजू से हो जाता हैं । पति का सुख तो उन्हें बहुत कम मिलता हैं क्योंकि अल्पावधि में ही उनके पति की मृत्यु हो जाती हैं । एक विधवा का और खास करके हिन्दू परिवार की विधवा का जीवन कितना असह्य होता हैं देखिए ` दैवी प्रशासन रमा दी के लिए आरम्भ से अन्त तक जटिल ही बना रहा । भरी जवानी में उन्हें वैधव्य ने श्रीहीन ही नहीं किया, दीन-हीन भी बना दिया । अबोध पुत्र को लेकर वह कहाँ जा सकती थीं ? न सास, न ससुर, न कोई आत्मीय, जो थे उन्होंने औपचारिक सान्त्वना के

अतिरिक्त उन्हें किसी भी प्रकार के संरक्षण के लिए आश्वस्त नहीं किया ।`[१]

परंतु रमा दी हार माननेवालों में से नहीं थी । ...` इसीसे वह कर्मठ नारी, एक बार फिर दैवी प्रशासन के सम्मुख,उसी समर्पण-भावना से झुक गई । इधर-उधर भाग दौडकर ,उन्हें एक स्कूल में नौकरी जुट गई । वहीं से प्राइवेट बी.ए., एम.ए.कर उन्होंने ट्रेनिंग भी कर ली ।`[२]

पुत्र के बडे हो जाने के बाद भी रमा दी को सुख नहीं मिलता । पुत्र विदेश से बहू भी अपने साथ ले आता है । रमा दी को अपनी बहू से हर पल हर जगह अपमानित होना पडता है । इस तरह, दु:ख में जन्मी,दु:ख मे पली,रमा दी को न तो पिता से, पति से और पुत्र से सुख मिलता है । दु:ख में ही उसका अन्त होता है । इस पर लेखिका कहती है` मुझे हमेशा यही लगता कि रमा दी के साथ विधाता ने जन्म से मृत्यु तक केवल अन्याय ही किया है ।`[३]

` शायद` कहानी की नायिका` कुसुम` पारिवारिक और ग्राहस्थ्य जीवन का सुख प्राप्त करने से पूर्व ही विधवा हो जाती है । अपना विधवा जीवन वह किस सादगी से बीताने लगती है देखिए ,` संयम और वैराग्य की तिक्त कटु औषधिपान से कुसुम की काया का मृतप्राय सौन्दर्य निश्चिय ही द्विगुणित हो उठा था । पर कैसा आश्चर्य था कि जिसने यौवन की देहरी पर खडे होते ही, एक बार ऐसी करारी ठोकर खाई थी कि लडखडाकर गिर ही पडी थी, वह अब फूँक-फूंककर कदम रखना सीख गई थी ।`[४]

विधवा कुसुम भी परिस्थिति के सामने घुटने नहीं टेकती । वह भी ` ज्यूडिथ से जयन्ती` की रमा दी की तरह ही साहस दिखाती है -` कुसुम विधवा

---

१ ज्यूडिथ से जयन्त (कैंवा) - शिवानी - पृ.सं.७० ।

२ - वही - पृ.सं.७० ।

३ - वही - पृ.सं.६९ ।

४ शायद (कृष्णावेणी) - शिवानी - पृ.सं.१३० ।

था, पर अपने वैधव्य के कृष्ण-मेघ की छाया से उसने अपने जीवन काश को म्लान नहीं होने दिया था । अधूरी शिक्षा पूर्ण कर वह केवल अपनी योग्यता की बैसाखियाँ टेकती, अब शिक्षा विभाग के एक ऊंचे पद पर पहुँच चुकी थी ।`[१]

(२) पतिता, वेश्या, बलात्कारिता नायिकाएँ --

पतिता -- पापाचरण करनेवाली, सामाजिक बन्धनों की अवहेलना करनेवाली नायिका पतिता श्रेणी में आ जाती हैं । इस प्रकार की नायिकाओं अपने पाप का एहसास हो जाने पर पछतावा भी होता हैं । उदाहरण के रूप में करिए छिमा` नाम की शिवानी कीसर्वश्रेष्ठ कहानी में चित्रित नायिका` हीरावती` को ही कीजिए । अपने प्रतिष्ठित प्रेमी को बचाने वह जो त्याग करती हैं वह पतिता होकर भी एक सती के त्याग से बढकर महान हैं । लेखिका के कथनानुसार वह पतिता होकर भी पतिता नहीं हैं,` किंतु जैसे तीर्थस्थान में किया गया पाप पाप नहीं होता, ऐसे ही कुमायूँ की पतिता में भी अनोखा तेज रहता हैं ,ऐसा मेरा विश्वास हैं । वह पतिता होकर भी पतिता नहीं लगती । अपने प्रेमी को बचाने में, अपनी अवैध संतान को जलसमाधि देने में वह तिलमात्र भी विचलित नहीं होती ।`[२]

वेश्या -- अर्थार्जन और कामवासना की पूर्ति के लिए वार विलास करने वाली नायिकाएँ प्राय: इस श्रेणी में आ जाती हैं । नायिकाओं के प्राचीन स्वरूप के अंतर्गत` सामान्या` नायिका भेद में इसकी पर्याप्त चर्चा हम कर चुके हैं । अस्तु, यहाँ हम इस प्रकार की नायिका` चांद` का उल्लेख मात्र करते हैं । इस प्रकार की दूसरी नायिका` तोप` कहानी की तोप उर्फ क्रिश्चियाना वैरानिका टॉमस हैं जो अपनी लैंगिक भूख की तृप्ति केलिए पचास साल की उम्र में भी इक्कीस साल के तरुणों से विवाह संबंध स्थापित करती हैं ।

---

१ शायद (कृष्णवेणी) - शिवानी - पृ.सं.१२९-१३० ।

२ भूमिका - मेरी प्रिय कहानियाँ - शिवानी - पृ.सं.९ ।

बलात्कारिता -- पतिता और वेश्या से इस श्रेणी की नायिका अलग किस्म की होती हैं । नायिका, समाज के कुछ ऐसे तत्वों की शिकार होती हैं जिससे पूरा भविष्य अंधकारमय हो जाता हैं । तेरह वर्ष की आयु में भोलादत्त द्वारा उसपर बलात्कार हो जाता हैं । इस आघात से उसके माता पिता चल बसते हैं । स्वयं उसका जीवन भी अर्थहीन बन जाता हैं, परन्तु बरसों बाद पुष्पा पन्त अपना प्रतिशोध पूरा कर ही लेती हैं । एक समारोह में मंत्री बनकर आए भोलादत्त के सिरपर घन मारकर उसकी हत्या कर देती हैं ।

(३) शार्विक, ठगिनी, डकैत नायिकाएँ --

चोरी करने का ठेका अकेले पुरुषों ने नहीं लिया हैं, कुछ स्त्रियाँ भी ऐसी होती हैं, जो यह काम अकेले भी बखूबी से कर सकती हैं । चोरी करने के पीछे अनेक प्रकार के उद्देश्य हो सकते हैं । किसी चीज की आवश्यकता न होने पर भी कुछ लोग चोरी करते हैं, वह उनकी मानसिक विकृति होती हैं, तो कुछ लोग इसे अपना पेट पालने का धंदा मानते हैं, किन्तु सामाजिक और नैतिक दृष्टि से तो एक अपराध ही हैं ।

`सती` कहानी की नायिका `मदालसा सिंघाडिया` एक ऐसी ही शार्विक नायिका हैं । वह महिलाओं के डिब्बे से यात्रा करती हैं । उनसे बातचीत करके उनकी संवेदना (सहानुभूति) हमदर्दी प्राप्त करती हैं । उन्हें कुछ चीजें खिलाती हैं जिनको खाने के उपरान्त सहयात्री महिलाएँ किसी गहरी नींद में डूबकर बेहोश-सी हो जाती हैं । गहरी नींद में डूबे सहयात्रियों के गहने और द्रव्य लेकर वह फरार हो जाती हैं ।

`साधो ई मुर्दन कै गाँव` की एक नायिका स्वयं तो चोर नहीं हैं परंतु वह एक खतरनाक डकैत की प्रियतमा हैं । उसे गहनों का शौक हैं । `डाका डालने पर ढेर सारे आभूषणों को खोलाकर, खोए-सा घोट दिया जाता । गलाई गई उस सुवर्ण राशि से फिर नवीन आभूषणों की सृष्टि होती । इस प्रकार वह दस्यूदल की पटरानी नित्य नवीन आभूषणों से जगमगाती रहती ।`[१]

---

१ साधो ई मुर्दन कै गाँव (अपराधिनी) - शिवानी - पृ.सं.१६ ।

इसी कहानी की और एक नायिका 'मग्गी' ठगिनीश्रेणी की नायिका है। अपने जीजा की सहायता से वह लोगों को ठगाने का काम करती है। विवाह ईच्छुक अधेड उम्र के पुरुषों से विवाह का स्वांग रचाकर 'नये पति का विश्वास, वह अपने स्वस्थ यौवन का ब्रह्मास्त्र छोडते ही प्राप्त कर लेती'। कहाँ क्या धरा है, जानने में फिर उसे विलम्ब नहीं होता। मरी सौत के अंकना, कंकना या सास की जीर्ण पोटली में छिपी सम्पति, कृपण वृध्द पति की चूल्हे के नीचे गाडी गई धनराशि वह एक दिन लेकर सहसा चम्पत हो जाती। लाख ढूँढने पर भी फिर न जीजा मिलता, न साली'।[1]

(४) हत्यारिन, खूनी नायिकाएँ --

गलती से भी यदि चींटी पर हमारा पाँव पडता है तो चींटी भी काटे बिना नहीं रहती, फिर मनुष्य के लिए तो यह बात फिर भी आसान होती है। राग, लोभ, द्वेषा, मोह, मद, मत्सर मनुष्य के ये षाड्रिप हैं। इनके बहकावे में आकर मनुष्य अपना सन्तुलन खो बैठता है तब उसके हाथों हत्या अथवा खून जैसा जघन्य पाप भी हो जाता है। स्त्री भी इसके लिए अपवाद नहीं हो सकती।

शिवानी की कहानियों में प्रस्तुत श्रेणी की नायिकाएँ भी प्राप्त होती हैं जिनके हाथों जान-बूझकर अथवा अनजाने में खून हुआ है।

'जा रे एकाकी' की नायिका 'चनुली' इतनी मासूम है कि वह अपना अपराध बिना हिचकिचाहट के स्वीकार करती है 'मन मारी था, उसने मुझ से ऐसी बात कह दी तो मैं क्रोध से पागल हो गई। खींचकर मैंने दरांती उसकी ओर फेंकी, मैं क्या जानती थी दोदी, कि एक ही चोट में उसकी गर्दन ऐसे लटक जाएगी[2]?

वह अदालत में भी यही बात दुहराती रहती है --'नहीं साब, मैंने खून नहीं किया, वह तो मुझसे हो गया।'[3]

---

१ साधो ई मुर्दन कै गाँव (अपराधिनी) - शिवानी - पृ.सं.७५।

२ जा रे एकाकी (अपराधिनी) - शिवानी - पृ.सं.३४।

३ - वही - शिवानी - पृ.सं.३५।

`छि: मम्मी तुम गंदी` हो` कहानी की नायिका` जानकी` बारे में ऐसा नहीं हुआ हैं । उसने जानबूझकर अपने प्रेमी की मदद से अपने पति की हत्या में सहभाग लिया हैं । पति की हत्या के बाद अपने प्रेमी को नहाने के लिए वह गर्म पानी देती हैं और चाय बनाने बैठती हैं । एक एक कर फिर तीनों बच्चे जाग जाते हैं, उन्हें डाँट डपटकर वह दूसरे कमरे में सुला देती हैं । दोनों मुंड फिर मंत्रणा में जुट जाते हैं -` तुम चले जाओ, मैं भुगत लूँगी[1]।` वह ढाल बनकर प्रेमी को ढक लेना चाह रही थी ।

` अस्त्र माई ` की एक नायिका` लक्ष्मी उर्फ लछमी` अपनी सास और पति से तंग आकर एक दिन मौका पाकर चट्टान से नीचे धकेल कर हत्या करती हैं । इसी कहानी की दूसरी नायिका` रजुला` अपने प्रेमी की प्रतिष्ठा को सुरक्षित रखने के लिए अपनी अवैध संतान की जन्मते ही हत्या कर देती हैं ।

` भोलनी` कहानी की नायिका सुहासिनी अपनी सगी बहन विलासिनी जो उसके पति के साथ पति के शयनकक्ष में उसे दिखाई देती हैं तब अपनी इस सौत बनी बहन को गोली मारना चाहती हैं परंतु निशाना चूक जाता हैं और गोली स्वयं सुहासिनी के पति को लगती हैं ।सुहासिनी का पति मर जाता हैं बाद में सुहासिनी स्वयं अपने आप को गोली मार कर आत्महत्या कर लेती हैं ।

` तर्पण` की नायिका` पुष्पा पन्त` भोलादत्त का खून किस हालात में करती हैं देखिए । तेरह वर्षों की उम्र में पुष्पा पन्त पर भोलादत्त बलात्कार करता हैं । इस आघात से उसके माता पिता चल बसते हैं । पुष्पा पन्त आज एक स्कूल की हेडमास्टरनी हैं । बरस बीत जाते हैं । भोलादत्त मंत्री बनकर आ जाता हैं । उसके स्वागत समारोह पुष्पापन्त को गीत गाने का जिलाधीश आग्रह करते हैं । जब उसकी आँखों के सामने चलचित्र सी वह भयावह स्मृति सरकने लगती हैं -- जिसके परिणाम स्वरूप ..` बिजली की तडप से पुष्पा पन्त खडी हो गई । क्रोध से उसका शरीर

---

१ छि: मम्मी तुम गंदी हो (अपराधिनी) - शिवानी - पृ.सं.५७ ।

थर-थर कांप उठा । घर की बल्ली से लटकी देवतुल्य सन्तपिता की निर्जीव देह, छाती पकडकर बैठ गई माँ ... सब एक-साथ स्मृतियों के तीखे भालों से उसे कोंच उठे । वह एक क्षण को सब कुछ भूल गई । कुछ ही घंटों पूर्व तम्बू गाडने लाया गया बडा-सा घन वहीं पडा था । लपककर उसने उठाया और दोनों हाथों से पकडकर दन्न से भोलादत्त के सिर पर दे मारा । ठीक जैसे चितई मन्दिर के पथरीले प्रांगण में जटाधारी नारियल फट्ट से फूटता है,ऐसे ही भोलादत्त का सिर फट्ट से दो समान फंकों में फटकर रह गया ।`[१]

` के ` कहानी की नायिका उर्फ डॉक्टर कमला अपने पति शेखर का किशोरी से मिलना जुलना, उनके सम्बन्ध का पता जब ` के ` को लगता है तो वह किशोरी की हत्या की योजना बनाती है । एक दिन वह किशोरी को कुल्फी में जहर मिलाकर खिला देती है और कुछ ही समय उपरान्त किशोरी एक दो हृस्त और उल्टियां करके इस दुनिया से चल बसती है ।

इस तरह हम देखते ही कि शिवानी की कहानियों में कुछ ऐसी भी नायिकाएँ दिखाई देती हैं जिनके हाथों जानबूझकर अथवा अनजाने में हत्याएँ हो गई हैं ।

(५) महत्वांकांक्षिणी नायिकाएँ ---

अपने बारे में,अपने जीवन साथी के बारे में, बच्चों के और परिवार के बारे मे हर एक स्त्री की कुछ आदर्श कल्पनाएँ होती हैं उनको प्रत्यक्ष में उतारने के लिए हर स्त्री हमेशा प्रयत्नशील रहती हैं । कभी कभी उसकी ये आकांक्षाएँ हठ में परिवर्तित हो जाती हैं और ममत्व के स्थान पर अधिकार की भावना पनपने लगती हैं । स्व से स्वाभिमान और फिर स्वाभिमान से अहंकार जन्म लेता है ।

---

१ तर्पण (माणिक) - शिवानी - पृ.सं.८१ ।

शिवानी की कहानियों में महत्वाकांक्षिणी नायिकाओं के भी कतिपय उदाहरण प्राप्त होते हैं --

`मामाजी` कहानी की `रोहिणी` को ही लीजिए । एक गरीब पुरोहित घर की बेटी रोहिणी उच्चपदस्थ अफसर राजेंद्र की पत्नी बन जाने के बाद उसकी महत्वाकांक्षा और अधिक बढने लगती है । `एक जिले से दूसरे को तबादला नहीं होता तो वह पति को अकर्मण्य होने के ताने देती । तबादला होकर वह तरक्की पर जाता, तो वह पिछले पद के लिए बिसूरती - ` इससे तो आपकी डिप्टी कलक्टरी अच्छी थी । कलक्टर न हुए,तहसीलदार हो गए । जब देखो तब एक न एक मिनिस्टर, डिप्टी मिनिस्टर कंधे पर सवार हैं । सेक्रेटरियट में जरा सी कोशिश से पहुँच जाइएगा । रतकी जीजी को देखिए न, जीजाजी डिप्टी सेक्रेटरी क्या हुए, रानी बन गई हैं ।`[१]

महत्वाकांक्षा नारी में आखिर क्यों जगती है इसका उत्तर `शर्त` कहानी की नायिका रमा से ही मिलेगा । रमा स्कूल मास्टर की बेटी है । अपने अभावग्रस्त घर के कारण रमा की महत्वाकांक्षा बन जाती है उसे भी लगता है कि उसकी सहेली लीला जैसा आई.सी.एस.पति मिले । आखिर उसका भी विवाह गिरीन्द्र जोशी आई.सी.एस. से हो जाता है । इससे भी उसकी महत्वाकांक्षा पूरी नहीं हो जाती । वह अपनी सहेली लीला को अपने घर बुलाकर अपना वैभव दिखाकर नीचा दिखाना चाहती है ।

महत्वाकांक्षिणी नायिका का और एक उदाहरण `प्रतिशोध` कहानी में दिखाई देता है । इसके रूप वर्णन से ही इसके महत्वाकांक्षिणी होने का मानो प्रमाण ही मिलता है --

`सौदामिनी में वे सब गुण थे, जिनका एक ऊँचे अफसर की पत्नी में होना अनिवार्य होता है । वह अपनी उन्नत नासिका हवा में उठाकर चलती थी । उसकी गर्वीली ग्रीवा की तनी ऐंठन,उठने-बैठने में एक निराली अकड और सर्वोपरि उसकी अनुकरणीय तटस्थता वास्तव में दर्शनीय थी ।`[२]

---

१ मामाजी (कैंपा) - शिवानी - पृ.सं.१२३ ।

२ प्रतिशोध (रतिविलाप) - शिवानी - पृ.सं.८९ ।

` नौकरों को ही नहीं, पति के अधीनस्थ अफसरों को भी वह तर्जनी पर नचाती रहती । किसी को सरकारी गाडी घर भिजवाने के लिए टेलीफोन करती, किसी को सरकारी माली की अपने बंगले पर बेगार लगाने का आदेश देती और किसी को अपनी भव्य मुस्कान से मोहकर कहती` अरे आप देहरादून जा रहे हैं ? एक कट्टा बासमती का लेते आइएगा ।`[१]

सौदामनी के पति की स्थिति के बारे में लेखिका लिखती हैं --` ऐसी` रोबदार पत्नियों का व्यक्तित्व प्रतिभासंपन्न पति के व्यक्तित्व को दबाकर जैसे कुण्ठित कर देता है, वैसे ही शंकर का व्यक्तित्व भी दबकर सिकुड गया था ।

महत्वाकांक्षिणी नायिका अपनी बेटी के विवाह की चर्चा शंकर से करती है --` अपनी बिरादरी का आई.ए.एस. तो दूर, इंजीनियर,डॉक्टर दामाद जुटाने में ही तुम्हारा सारा फण्ड निकल जाएगा । उसपर हमारे मकान पर अभी छत भी नहीं पडी । इस युग के प्रत्येक बुध्दिमान माता-पिता का कर्तव्य है कि वे अपनी सन्तान को ऐसे प्रेम-विवाह के लिए उत्साहित करे ।`[२]

महत्वाकांक्षा अपनी सीमा जब पार करती है तब उसका फल भी उसके अनुसार मिलता ही है । उसकी लडकी किसी लकडी के मुसलमान व्यापारी के अकर्मण्य छोकरे के साथ भाग जाती है और स्वयं उसका पति शंकर एक कॉल गर्ल के जाल में फँस जाता है ।

इस तरह` अति सर्वत्र वर्जयेत` की सत्यता का अनुभव इन महत्वाकांक्षिणी नायिकाओं के संदर्भ में आए बिना नहीं रहता ।

---

१ प्रतिशोध (रम्या) - शिवानी - पृ.सं.८९ ।

२ - वही - शिवानी - पृ.सं.९१ ।

उपसंहार

` शिवानी की कहानियों में नायिकाओं में नायिकाओं के विभिन्न रूप` अध्याय के उत्तरार्ध

(ब) आधुनिक दृष्टिकोण से शिवानी की कहानियों की नायिकाओं के वर्गीकरण में --

१) अवासनात्मक

२) वासनात्मक तथा

३) अन्य

इन तीन वर्गों में विभाजन करने का मैंने यत्न किया है।
उपसंहार में, मैं, निम्नलिखित निष्कर्षोंतक पहुँच गया हूँ।

(१) शिवानी की कहानियों में अवासनात्मक वर्ग में निम्नलिखित नायिकाओं को हम अन्तर्भूत कर सकते हैं।

(क) माता

क्र.	नायिका	कहानी
१	जानकी	छिः मम्मी तुम गंदी हो
२	रमा	ज्यूडिथ से जयन्ती
३	ऐनी	अनाथ
४	तिला	मौसी
५	मामी	तीन कन्या
६	तिलोत्तमादेवी	जोकर
७	हीराक्ती	करिए छिमा

	नायिका	कहानी
(ख) दादी		
१	दादी	दादी
(ग) पुत्री		
१	पुष्पा पन्त	तर्पण
(घ) बहन		
१	विलासिनी	मीलनी
२	रोहिणी	मामाजी
३	लेखिका	कालू
४	लेखिका	मेरा भाई

(२) वासनात्मक वर्ग में निम्नलिखित नायिकाओं का हम अन्तर्भाव कर सकते हैं ---

(अ) प्रेमिकाएँ

(१) प्रेम का आदर्श प्रस्तुत करनेवाली नायिकाएँ

`जा रे एकाकी` की चुनुली और करिए छिमा हीरावती अर्थात् `अलख माई` की रजुला।

(२) असफल प्रेमिकाएँ

१	रोजी	तुलादान
२	जानकी	छि: मम्मी तुम गंदी हो
३	किकी	भिक्षुणी
४	तिला	माँसी
५	कुसुम	शायद

असफल प्रेमिकाएँ ---

६	चांदमनी	दंड
७	विलासिनी	भीलनी
८	प्रा.अनुराधा पटेल	मन का प्रहरी

(ब) गृहस्थ नायिकाएँ --

(१) सफल गृहस्थ नायिकाएँ ---

१.माया	बन्द घडी	३. राधा	मित्र
२.रमा	शर्त	४.आरती सक्सेना	अपराजिता ।

(२) असफल गृहस्थ नायिकाएँ --

१	लछमी	अलख माई
२	जानकी	छि: मम्मी तुम गंदी हो
३	मानवी	चांद
४	रमा दी	ज्यूडिथ से जयन्ती
५	किकी	भिक्षुणी
६	तिला	मौसी
७	माधवी	प्रतीक्षा
८	बानो	लाटी
९	ऐनी	अनाथ
१०	चंदो	पिटी हुई गोट

(क) अन्य नायिकाएँ

(१) विधवा नायिकाएँ

१. रमा दी ज्यूडिथ से जयन्ती

२. कुसुम शायद

(२) पतिता

१. हीराक्ती करिए छिमा

वेश्या

१. चांद चांद

२. तोप तोप

बलात्कारिता

१. पुष्पा पन्त तर्पण

(३) शर्विलक

१. मदालसा सिंगाडिया सती

ठगिनी

१. मग्गी साधो ई मुर्दन कै गाँव

डकैत

१. कह साधो ई मुर्दन कै गाँव

(४) हत्यारिन, खूनी नायिकाएँ --

१. चनुली जा रे एकाकी

२. जानकी छि: मम्मी तुम गंदी हो

३. लछमी अलख माई

४. रजुला अलख माई

५. मुहासिनी मीलनी

(४) हत्यारिन, खूनी नायिकाएँ --

६.	पुष्पा पन्त	तर्पण
७.	के	के

(५) महत्वाकांक्षिणी नायिकाएँ --

१.	रोहिणी	मामाजी
२.	रमा	शर्त
३.	सौदामिनी	प्रतिशोध

इस तरह आधुनिक दृष्टिकोण से शिवानी की कहानियों में नायिकाओं के विविध रूप दिखाई देते हैं ।

••